\$ (3 kgs

## त्रागताम ।

বড়া নিবাসি

बोयूक क्लातनाथ वनु कर्क विव्रिष्ठ श्रेश

एमा अंगुर्ग किंकरम

## কলিকাতা

वीमधूर्मन नीतात हे हरनाहरखां मत्र यद्य

প্রধানার মূদ্রিত। সাহীরীশ্রীকাত নম্বর বাসী।

2592

## **मृ**हीश्ज

निर्द्धंन्द्र	17/81
	>
हिन्दा	8
रिलम वसाना	•
र्जाका र स्व।	þr 
एक वन्सम	•
हिर्देख्यान हम् । तम्बना	<b>&gt;</b> ?
श्रीवामहस्र दम्ब	>#
शिवादमञ्ज्ञ वदन शंभने	47
দীতাসহ শ্রীরামের কথ	₹\$
রামচন্দ্র প্রতি দীতাৰ উদ্ভি	२७
সীডা প্রতি রামের বিনয়োজি	58
সীতার শঙ্গহৈতে দেবগণের উৎপশ্বি	ર૧
দেবতা গণেব প্রতি জনেকীর অসুমতি	7,3
<b>(मर्वजानन कर्जुक नाममक निर्मा</b> ग	45
সীতার অজে দেবগণের বিশ্ব	ಿತಿ
श्रीत्रामहस्त्रम् द्रात्म	35
मात्रामध्यम कुछ वामहत्स्यत्र धोरवीध	
बिद्रामहस्त्रक सानकोत्र शद्रिहम	80
अद्वारमङ कामनीन।	84

भोजामह आम्ह्रासा हैए बनायन छ व	8 3
वामक्रम अधि शहरा निव खन	200
शिवासक्ता आदि स्वागायत छन	a d
ब्रीयान्त्र के ब्रिक्ट ६ नमानत्त्र एकि राका	3,
खीरामें कि निष्मी 'सामि स्मदग्रदगढ छ व	tes
জীৱানচন্দ্র প্রতি গন্ধর্ম ও সিদ্ধ ধ চারণগণের তা	ę,
রাষ্চন্দ্র প্রতি ভীর্ষ গণের স্তব	¥ .
শ্রীরামচন্ত্র শ্রতি পর্বত গণের শুব	84
প্রীরাসচন্দ্র প্রতি গয়াস্থরের কর	63
শ্রীয়ানচন্দ্র প্রতি বুক্ষ ও পশ্ব দিনের তব	
भीषायह औशास्त्र क्लेखां श्रम	

# রামরাস।

# ভূমিকা।

🕶 নমো নমো নারায়ণ ত্রিজুবনপতি। यात श्रम भारत्य कारमा भारत्रको ।। ব্রহ্মাব জনস্থার সুনাভিপক্ষ**জে**। शकाद छेरलिक यात इद्रनमह्दारक ॥ হেন মহাপ্রভুপদ মনেতে ভাবিরা। व्यक्तिर्वाङ्ग्ला ভाষायु द्रविष्रा ॥ छावि मदन केवि नहि कि सीनि कि इग्र। यामृत प्रतिसः अन आता क्य नग्र॥ मृशाल रहेगा हाटर शुंखा गिर्क्मा (वा। ৰামন ধরিতে যেন চাহে দ্বিজ্ঞারতজ্ঞ। গিরি লংঘাইডে যেন চাহে পদুজন। গজেরে ধরিতে যেন মুলা করে মনঃ।। নেই মত আশা মোর দেখি বিপরীত। হরিষে বিবাদ হয়ে ভাবেজে নোহিভ।। बक्ता विक्टू क्रम्मलम क्रिया कार्रा खामुनीना **धाराभित मुख्य रहम**ः

বিপর্যায় ভয় হোর মলে হয় আর। ভাগাদোধে পাছে পরিক্রম্ভয় সার । এই পরিহার মাগি পশিত সদনে। खख्डारमञ्जलाथ मा समेरत कान खरम ह रमालि अरुक्त (मथ छक्त कति मिटर। জ্ঞানের অপরাধ মার্ক্সনা করিবে !! বিদ্বাল হইলে ভার এই সে উচিত। দোষ তাজি ৩০ গৱে মহতের রীড া বিপ্রপদরক্ষঃ পিতৃল্যেক্র চরণ। শিক্ষাঞ্চরপোদপ্রম করিয়া স্মরণ।। দীক্ষাপ্তরাপদাস্থ্য মনেতে মঙ্রি। खनक खननी शाहशद्यं भिद्र श्रीत ॥ গুরুষ্কনচর্ণপক্ষকে করি নভি। বিরচিব প্রভুলীশা করিয়া ভক্তি ॥ তন্ত্ৰ মত কৰ জীমি ংছিলা নাজানি। **छ्हां न कार ७** महार बार श कन शून भागि । শৈশরাজসুতা গৌরী শুলেন সাদ্যর। ল্লেডাযুগে যে ধীলা করিলা রযুবরে।। চিত্রকৃট শৈলে রাদ করিলা যখন। खनकनिम्नी मरम् खसूख लगान ॥ দেই রামলীলা-কথা বিস্তার করিয়া। কহিব সে সুধারণ ভাষার রচিয়া॥ পূর্ণব্রহ্ম অবতার কৌশল্যানন্দন। **औरक्षांत्रनाथ वसू क**ित्रना तहन।।

গ্রন্থকারের পরিচর।

. জाऊश्रेत्र मिरवपन खन यहाँ गर्छ। জাপনার পরিচয় দিতে কিছু হয়॥ জাভাবী পশ্চিমতটে গ্রাম প্রীরামপুর। ভাঁহার পাশ্চিমদিক অতি সংপদূর।। বিশিষ্ট সমাজ খাড় নামে বড়াগাম। কুলীৰ কায়স্থ বিশ্বৰাথ বসু নাম।। ভাহার ভদয় আমি দীন অকিঞ্ন। পর্মাভাততে মন মন্ত সর্কাকণ 🕫 বুগল ভেন্ম মোর সর্ব্য প্রিয়বর ' **८का**हे व्यक्तनाथ वम् छटन खन्द्रम् ।। कनिष्ठ जीतकनाथ यमु धनेशाम। मर्कीमा कक्षणां मृद्ये शक्टित श्रीतां ।। **অভশক নিবেদৰু স**ার চরণে। গ্রন্থারত্তে স্পক্ষিত হুই বড় সলে।। भारक् इंद बर्द्र थन के तफ खन्न। वा कद्द्रन द्वामध्य कोमनगाउनस् ॥ ध्यजूत कीईरन धजू अमूक्त हरन। करथे अधिश्वान रुत्य दोका वलाहित्य॥ পতিতপাবৰ রাম কল্লামাগর: কুপাদৃষ্টে হের নাথ তারিতে পামর !! **बिक्नांत्रनाथ करह गीरक जिह मन्ध्रा** মূত্ৰ কবিভারস গুন সৰ্বজন !!

#### शर्वभरम्मा ।

ারাগিণী ইমন। ভাল কাওয়ানি।
নমোগণেশ গজাবদন। কে হে, লাখোদর এফ
দন্ত, বিশ্ব বিপদ হরণ। থকা কায় প্রভু সকা।
শুভক্ব, পান্ধভীনন্দন ব্রহ্ম প্রাৎপর, ওঁরণ
ভারণ ভালে কলেবর, বেহি চরণ শর্ধ। ধ্রু।।

#### जिल्ला !

शरतस्त्र शंकानम्, প্রণমামি জাগন, नामान्त्र धर्द करनदर । সর্ববৈদ্ধে সুবিজ্ঞাতম, বিভিন্নতা মনোরম, মহাযোগী পরম সুন্দর। সুশোভিত চারি করে, শন্ত চক্র গদাধরে, প্রকার পথা শোড়েভ ভাষ : र्यात्रभाष्ट्री स्मारम धरम, कीए। करत्र माना इतन রতন নূপুর রাজা পাছ।। কি উজ্জ্ল তিনয়ন, সিন্দুরাভ স্বরণ, বিরাজিত মুখিক বাহন। व्यवत्त लास्य कृष्टन, मुख्यकृत वानमन, িশিরেতে মুকুট বুফিরণ।। **ह**जूर्व्हम भद्रायन, जूमि बक्त नांत्रांशन, সর্কাত্রে ভোষার পূজা হয়। गर्क कार्रा अलकर, गर्कश्रद भदारभर.

বিশ্ববিদাশন নাম, পুর্ব কর মনস্কাম, ও চরণ বিনা নাহি গতি। প্রামি অভি অকিঞ্ম, না জানি জপ ভজন, দীনে কুপা কর গণপতি॥ धामना देशीय मानाटल. निरायमन ७ शामाटल. श्रीवारमव कोना अकानिव। •क्वि महि छानि हिष्छ, कि निशन कि दांगाछ. ভাবি মনে কি রূপে রুচিব।। কুমি হে ক্ষরণ গুরু, ত্রীচরণ কণ্পতরু, मिवा खान कृत स्मादत मान। कुषावरलांकन कह, मीरनद क्रूदिङ इद. मोरन किरत हाइ खगवान ॥ मुच भाक फ्लांटनावक, श्रीलव उक्करन इस, ষারণে তথাতি হয় নাল। শ্রিকেদারনাথ কর, কুপা কর কুপামর, অকৃতী পাদর নিজ দান ॥

#### अभ काशिकांवमना।

রাগিণী বাহার। ভাল অং। কালি কুপয়া মা প্রপন্ন জনে। শরণ কয়েছি ঐ প্রীরাঙ্গা চরণে।। মা ভোর নামের জোরে, ভব ভবে নাহি ঘোরে, সার জেনে হাদে ভোরে বেশেক সকলে।

#### ত্রিপদী।

नमामि दिसरिक्षिनि, कोलि कोलनियाँ विति, मशानित्र भूद्धिके जोतात्मा। শ্বৰ্গ বুগাতল ভূমি, সকলেই গুল ভূমি, कुभि कामा दूमि लख गरश।। रद्रभ सीरामनिसी, सरपन आंखा सिनिक गाफुनी क्रभनी महक्षमा। জিনি ভরণ জরুণ, **5315**ल देवेग. ন ধরে উদয় শশিকলা।। রতন মূপুর বা**ভো.** ভাষতী কান্দ্রে লাজে, ব্যস্কারে নোহিত তিন পুর। किंग्डि किन्ति (१६), न् नृत्रकर्वेट अभी (धरा, ভাতে গাণা ওতন গুলুর। उपूर्त मां गंजीय, श्रकारने जियान निद्र, मुक्षमञ्च क्षम् जड्म। গিরিশৃঙ্গ করিকুত্ত, শ্রীফল কিবা দাড়িস্থ, প্রোধর সুধার কলস।। मूमांगूक्लान करत, तताख्य मूस धरह, চারি ভুজে দেবিতে সুন্দর। किवा जूवन छेड्जूना, शतन त्मादन मूखमाना, ক্ষিরেডে মাধা কলেরর॥ (कांग्रि ठक्कथण जिनि, मूधकाण मूचवानि, मुशाङ्गाण दद्भिष्य वहन।

#### রাম্রাস।

ক্ষপুৎস মুক্তাক্টি, কিনা দাড়িখের সুচি, জন্মসূত্র বিকট দশন। লোকজিজ্বা ওজায়নে, ধারা বহিতেছে কমে, জাতিযু: গ শব লিভ দোলে। **एक्**रिश्वित्रकृत. नष्ट् नाशिकांत्र जून, जिल्हार कारन आध आला! अत्वादकली विशयती, भारतिना अप्रकृती. **जाकिनी (वाशिमी (करत मह्म**ी जमा भागानवाजिनो, यभात्व द्रवदिक्रियो, লেবারি নাশয়ে ভুরুতঙ্গে।। কুরাক্রাল খারীরে, থেন জ্বা ভালে নীরে. শোণিতের ধারা কি শোলিছে। होमितक रहिं जुल, जनना निवनुक, भिगांठ रेखद्रद **(व ना**हिर्छ ।: তালি অণ্পুরী কাশী, চরণে ক্লা সন্ত্রাদী, দিবানিশি নিরীক্ষণ করে। हमनोक तककार।, श्रीशांष मिरब्राह करा, थांग्र भेष भूडामूत नरत् ॥ कृषि मा मर्व्यमञ्ज्ञा मञ्ज्ञामिनीः मश्मारत हिल्कातिनी, महाध्यमम गातिनी, বিশ্বগতি জগৎ ভাবিনী ৷৷ आिम मीन छाकिछान. हत्रा मद्रगाश्च. त्का कद्र भीन हीन खरम। তরিবারে ভরঘোর, কেবল ভরদা ভৌরু, मा তোর জপার মহিমা বেদে শুনি।
তাই তাকি প্রাণপদে, হুলা কর এ প্রপদ্ধে,
তবে দে মাহায়া বড় গণি।।
देशपठी হর জায়া, দাক্ষায়নী মলামায়া,
বিশালাকী বারাহী বিমলা।
ব্যাগাখা রক্ষেবল্লভী, জয়া সুনন্দা বৈশ্বী,
ক্পাময়ী কুপাদ্দেই, বারেক চাহ গরিষ্ঠে,
তুই হয়ে তাপিড তনয়ে।
প্রিকদারনাথ বলে, স্থান দিও পদতলে,
এ দাদের নিদান সময়ে।।

अभ शक्कांद्र दक्षा।

রাগিণী কালাংড়া: ভাল এক চালা।
হৈর মা অপাজে গলে করুণাকারিণী। সংখদা
মোক্ষদা গলা, ত্রৈলোকা তারিণী। ঐ বারি
কারণবারি, সৃষ্টি আদি সুসঞ্চারি, শিরে ধরে
ত্রিপুরারি, ত্রিভাপছারিণী। গ্রন।

### ্লখুত্রিপদী। . -

দেবী সুরেশরী, গিরীস্রাকুমারী,
মাতা ভগবতী গলে।
ক্রিপথ গামিনী, ক্রিবোকভারিণী,
ভব তর্ল তর্লে।

শস্তুশিরোমণি, পভিতপাবনী, ভাগীরণী নিরাকার। खांगम निगरम, नाहि पि छ मीरम, ত্তব মহিনে অপার।। ও-জল মহিমা, অতুল জনীমা, কুপাম্য মাত্রগঙ্গে। हित्रशारमास्त्रा. जत्राध्रमी निरा, বিশ্ব ধবল ভরকে।। ছুরীকুরু নম, ছুদ্ধু করম, ভবসিস্কু কর পার। खामात मनित्व. **की**तन का कितन পুरसंग नाहि आतु !! ভোনারে যে জুন, কররে ভজন, তাহারে রক্ষভারিণী। नगरन्त्र खत्र, खात्र नाहि इत्र, कारूवी (गाक्रमाविनी।। পতিতোভারিণী, ভীয়ের অননী, বিশ্বম্মী লোকগতি। ত্রিভাপহারিণী, শোক নিবারিণী, কুরু কুপা ভাগীরথী॥ ভব কুপা যাত্তে, থাকে এ সংসাত্তে, ৰম তারে করে ভয়। हजूर्वर्श कन, जात कद्रजन, े भूबः गर्डवान नग्न ॥

>...

नव्रकदादिनी, कनूमनानिनी, भाकमा छाङ्टी शक। क्य क्य शस्त्र, अपन की नास्त्र, ट्य मा कळपोशाटक !! मुचाम खंडरम, अशनरम (अमरण, সুর্বুদী ভগবতী। রোগ শোক তাপ, সংহর গোপাপ, গঙ্গে হর মে কৃষ্টি।। (म्वक्शांतिनी: कवानाकांतिनी: (मह भा ठर्गा खग्र मर्भारत रामान, श्रीरान मधीत, ग्लामी स्वाटिक क्षाल एक्स ॥ নিকটে ভোমার, বসতি বাহার, (भहे छन श्री) भीन धनवस्र देवरम, তোম। शीन प्राप्तः मरह नृश्वि जुनीन ॥ ক্ষঠ শ্রীরে, वर्त्राम्ह नीद्र. কিন্তা নর্ট সফরী। धक्य कदि मानि, शूना मत्था सानि, দেবতা তুলনা করি ॥ ভো ভুবনেশ্বরি, শেতালী সৃন্দরী, সুরাসুর বর মাতা। ভিন সংসার, সকলি ভৌমার, তুমি মা ধাতার ধাতা।।

ভব জলে পাক, জন্ম কিছা শাক, দেবতা ঘুৰ্লত গণি। त्म अब (य भाग, यम्ब्य यात्र, करहर इस ट्यांन मूनि॥ कृष्त्र स्था कानि. ज्यीदश कानी, ভোমারে কিভি আনিল। बक्रमारश ४१म, डाँत शृक्वर म, ভাষনারে উদ্ধারিল।। শতেক বেভিনে, থাকিয়ে যে জনে, गंका गंका मूर्ण रहता। धच्छ (महे नद, र्भून) कटलदब्र, व्यानास्य रेतक्षं हरत ॥ লাগ্রগজ্ম. স্থান অসূপ্ম. भरभाग भीभ हत्तः। ব্ৰহ্মহতা পাপী, হয় বিফুক্স, মকরে স্থান যে করে॥ অপমূহ্য ক্ষয়, নারায়ণ হয়, अधि विम शर् खरन। মহাছরাচারী, পরশে ও বারি. चकात्र रेवकुर्छ हरन ।। (ज्या क्षेत्र)
 (ज्या क्षेत्र)</ क्ट नाहि ला निवानि। পিতা মাতা বৃত, দারা সূত কত,

আর যত বন্ধু আনি।।

कीवन इंडिटन, भागात्मरक स्वतन ক্ষণমাত্র হ' হতাল। इद्रिक्द्रिवरम, धाद्र अरम हरत, পরিয়া হুডন বাস।। स्वतारम स्वतनि, जूमि सुक्यूबी, शृक्ष रहनं कह (अहर ए। शिशु नत्रकृत, भर ममकूत, (इन मग्ना (करा करड़ा। জীবন পর্যান্ত, সকল সম্বন্ধ, অন্তে ভূমি কর থকে। ত্রৈলোক্যভারিণী, করণাকারিণী, (मदी सदमग्री शंका। প্লার চরণ, কবিয়া'ন্মবণ, নয়ন মুদিত কবি। .कहिटकू (कमांत्र, जीशम शंकांत्र, हद्दर प्रथिश गति।।

श्रश्ची हिन्द्र नारम्य दस्मन। ।
तोत्रां निधि काथात्र तारत भावत्त । श्रास्त्र कृषि
नरमभूत, काथा तास त्म त्मीत्र, जात्त्र ना तमचित्रा ध्यांग काँ रमद्रा। हिन्ना विम्नित्रा यात्र
त्व । श्रामि काथा यात्र तत्र ॥ ध्रमः॥
जिल्मो।
रस्म श्रेष्ठ श्रीहिक्ष महीत्र कुमात्र।

नवधीर्म व्यवज्री, श्रीमातांक ऋभ थाँउ, লীলা কৈলা অতি চমুৎকার।। भक्त कि बृध प्रकार । साहि ध्येषु व्यवसीनं, सहरवरण (जीववदन्। गठ कांति रेन्द्रुथंडा, बिनिया रद्रश लाखा, মোহ বার জগতের জন !! নবীন কিশোর কাম, তেজোরাশি দীপ্ত পায়, भादिमम्पन मट्स यकः हाडिया मध्यात काण, कतित्व धर्ममञ्जाम, প্রকাশিলা প্রেমর্ম কর। কমগুলু করে করি, কটিতে কৌপীণ পরি, 🔻 ু বহি-জোনে করি আনহাদন। মুড়ায়ে চাঁচর কেশ, ধরিয়া সন্ন্যামীবেশ, श्रु[तर कद्राय जमन ।। गुर्च नमां रुद्रियान, जीम मक्ष महारद्वान, অশ্ব বোল মুখে নাহি আর। र्द्रिनाम श्रकामिना, प्रक्तिशय (मधारेगां, অনায়াসে তরিবে সংসার।। শ্রীরাধিকা ভাবে হরি, শ্রীগোরাল রূপ ধরি, ब्रोधां छोट्य इट्य श्रेम श्रम। ঢৰিয়া পড়েৰ ধরা, ভাবেতে ৰা যায় ধরা, ় রাধানাম ভক্তির হ্রদ।।

गःकि रेतकवर्गन. इतिनामे मध्कीर्जन,

दारक थान क्वलान, क्वर वरन जान जान, কেছ ভাবে গড়াগড়ি যায়।। छेक् ग्रुटच छेक् भरम, । (कर नाटह (क्षाममरम, কেত বলে হরি হরি বোল। কেই মোহিতে মহাতে, পড়ে কান্দিতে কান্দিতে, কেছ ভারে ধরে দেয় কোল i ভারতি গোদাঞি দকে, নাচিয়া গাইয়া রকে, मीलांहरन कड़िना शंमन। महाध्येषु औरिक्छा, अश्मात कतिना ध्या, (प्रकृ भारत हरून भारत ।। क्षा भेज औरतीदाश मधा कर मीरन। আসি অতি মুদ্ধতি, নাজানি প্রেম্ফক্তি, করুণা কে করে তোমা বিলে॥ ভূমিত করণাসিন্ধু, কিঞ্ছিৎ করণাবিন্দু, म्बद्धा भीत्म कड़ मान। **शृंदां ७** मरनत चाण, त्या निवा के द्र मात्र, হাহা প্রভু কর পরিত্রাণ। মিছে সংসার মায়ায়, সৃহ কারাগার ভায়, মুক্ত আমি হব কত কৰে। कक्रमी कृतिरा करते. . अ यञ्जनी सार्व छरते, करव जामि यांव वृत्तांबरम ॥ मूर्य ७व अन शांव, कुद्ध कुद्ध (भरना बांव, मखाबिव ध्रज्जजनत्। ব্রজ্বাসি পদরেশ্, ভূষিত করিব তত্ন, गर्यम। विश्व गाधुमदन ॥

এই মনে অভিলাক, 'পুরাই দাসের আদা,
তবে ধক্ষ হয় ন্যকায়।।
আক্ষারনাথ বলে, মহাপ্রভু দয়া হলে,
ভবে ঘুচে সংসারের নায়।।

### গ্রিরামচন্দ্রকশন।। তিপদী।

इहेरव शामत बास्त, ननामि सानकीकांस, ব্বামচন্দ্র জবিলের পতি। পূর্বব্রহ্ম অবভার, বিশ্বরূপ নিশ্বাধার, कृलापृरहे हारू दौन প্রতি॥ जुमि कुषा कत बारत, हजूर्यर्भ मिर जात, थना धना जुटर ভाরে कम्र। বিপঞ্চাভঞ্জন তুমি, আকাশ পাতাল ভূমি, ভোষাতে উৎপত্তি সমুদয় ৷৷ ভাস্করকুণের পতি, দীনের হুষণ্ণ জতি, (रुट्ड एग्रा क्त द्रामधन। ভুমি রিফু ভূমি হর, ভুমি ব্রক্ষা পরাংপর, कृषि नर्दा कीरवत कीरन ॥ जन्दनिमी माज, कीड़ो बाद मानांद्रक, বিরাজিত রাজসিংহাসনে। ष्ट्रांमि मीन किया कर, मिक्करन नन्त्रन छर, निद्र इत श्द्राष्ट् यज्ता।

গুলংস্ত্র হোড্হাত, ঘন ঘন শ্রণিপাত, क्रिट्ड छड़ड खगांक्त ! मुन्द्र कामद्र वारम्, नाक्षम् नाँछाष्ट्रस्, इद्रान पूर्वाय निरुखद्र॥ नवपूर्वापनशाम, किराक्रश किवाधाम, श्क्षभ जुदान (क्वा भाष्र) किया महनाहत अन, वन यूझ कांकनम, মধুলোভে অনির্শ ধায়।। বাসকরে ধকুধান, দক্ষিণকরেতে বাণ, शत्म मनिमग्र शांत (पांदल। **(इरत दम्म अहाँ ए.)** मिलन इंदेश हाँ म, **ां शिर्टिष्ट् क्राक्श**्रिलारम्।। ख्यदान कूलन किना, कूछ्त ब्रख्नी पिया, ' আতার করেছে অভিগাস। pæ पूर्वाकान्छ चाह, कु मनि हम्पकाह, শ্রবের-মূলে শোভা পায়।। হীরক মুকুভানগ, নীলকান্ত আদি চয়, অক্সেলেভে নানা আভরণ। ক্তবা ক্ছিব শোভা, অগতের মনোলোভা, লজ্জা পায় শশির কিরণ।। क्रिमिटक धित्रिया श्रीत, मांडा भाग्र मिरानिनि, ভাবেতে হবি ও হয় गनः। भक्ष छोत्र खरित्राम, नरव दरन द्रोम त्रोम, धमा (सरे पारवांपा प्रत्ना।।

कि क्तिर खलूमान, शीमशंख रुष्ट्रमान, পড়িয়ে কতই শোভা পায়। बाब्गीकि निषम् अहे, धक्छ ध्रधान (महे, ক্সম অবভার বলে যায় ii বানেতে জনকসূভা, কিবা প্লপঞ্চা, कृत्रा खिरमाक् भक्ता। ल्लान कि भरनांहत, स्म श्रेष छादिरम शह, **एटक भाग ह**लूनर्भ गन।। নাৰা আভরণ গায়, বতন মূপুর পায়, यकारत जमत्र कारण नारक। চরণস্থারে শশী, অভিপ্রায় পতে বনি, নিম্নে কত ভাকর বিরাজে।। কি কহিব অপরপ, সুনাভি অযুতকুপ. क्रमही क्रिनियां यशकान। क जाइ नामात्र पूरा, कछ नए जिसकूरा, काछि है। म जिनिया वयान ॥ गना हि निमृत्रविम्नु, निष्कुरु ७ शन हेम्नू. जारह मीश करत बिजुवन। বিশব্বিত কেশজাল, নিশ্দি কত মেঘমাল, वाश्चित्राटक् कवत्री किक्न ॥ अभना (कामना (मरी), थाँहात छत्र (मति, मर्ट्स मन्।। मी क्रम द्रम । ত্রিলোকের মান্য যেই,ভোমার বামেতে মেই, महालकी सामकी केम्ब ।।

```
সর্ববোকহিতকারী, রাক্ষস দানব মারি,
         अमारतद भूतिहरत नहा।
महाटकार्थ कृषि हति, त्रावर्त निधन कति,
         विकीयत्व ममर्शित वक्षा ।।
र्यागीनन रयागामरमः शामभव्य छारवन्मरमः,
         উर्क अः स मूमिया नयन।
नुष (माक क्रांटनां मग्र, क्यांगादत क्रिक्स क्रा,
        भार दारा एवं सन मुख्या।
यमिनत ভागाकरन, प्रकृतिकार द्राम् वरत.
       शारिल मुक्त करव भाक शाय।
পভিয়া বিপদ বোরে, তাকিলে ভকভিছোলে,
        खरक्ष ভदिया (महे यांत्र ।।
नाहि छात्न मट्चढ, होमनाम विकायह.
       गरधारक कठहे आहा तमा
এক নামে কত কৰ, বুলা ভূমি রসভিল,
       মধ্যে যাঁর নাতি ধরে যশঃ।
आंगि पीन किया कति, ना आनि उक्रन हिंत,
        क्खान किळात तांच भागा।
त्रांभनीमा ध्वकां भिष्ठ, भागम करवृद्धि हिष्ठ,
         বাদনের চন্দ্র ধরা প্রায়।
শ্বন অহে ঞ্রী'নবাস, পুর্ণ কর অভিলাব,
       ভোমার কুপাতে কিনা হয়।
त्रभूमाथ मीलाधियः, ज्ञास्त प्रमान पित्रः
        शिक्ताइनाथ वसु क्या।
```

জীরাসচন্দ্রের বনে গমন।
ভক্ত গুলুনন্দন। রাম পডিডপাবন। জগদীখুর
জগজীবন। ইচকাল গেল কাল ভাব সে কাল
বরণ। বুথা কাজে দিন পেল, মুখে রাম রাম
বল, কেনার কহিছে প্রতিক্ষা। প্রনা

**श्र**ाह।

কৈলাদ ভূধর অভি মনোহর স্থান। इत गह रेह्यदकी खानरमः (थनाम ॥ मिटा वृङ्गभिः श्रमस्माशदत् कुठे सन्। সম্পে খেলার বড়ানন গঞানন ৷৷ बारत मन्त्री महाकान लिखेन धतिया। কহিছে হবস্ত্র কৌতুক করিয়া।। পাৰ্কভীর প্রতি কন দেব পঞ্চানন। अन आर्थिति के कि अपूर्व कथन ॥ সূর্ব/বংশে বিভু রাম5ন্ত্র অবভার। गौडा नारम महानक्ती প्रियमी डाहांत्र॥ कविना ज्ञामब नौना सामको महिछ। পরম পবিত্র কথা জীরামচরিত।। शीती कन धार्ममाथ कति निरदमन। শ্বনিবারে ইচ্ছা বড়ু সে সব কথন।। कि गीना कदिना दाम खानकीत मह। विखांत्र कतिया छांहा अ मानीरत कह।। চন্দ্ৰ হৈলন গুনহ চন্দ্ৰাননী। मीजा गर जामगीना देवना बच्चारिया

সেই রাগদীলা কহি অপুর্ব্ব কথন। স্থির হয়ে ভগবতী শুল দিয়া মদঃ॥ : लिङ्ग्छा भीगरमण्ड द्रामहस्य यस । इहेरनम दनगंभी क्यांड चारहम मरद्रा। महत्र छ न क मृत्र । अ युक्त सन्धन । ওপদ্বীর বেশে সবে প্রতেশিল ইন ।। মণিময় অলকার জাজিলা সকল। পতি অভুৱাগে দীতা পরিল বাক্ষ।। कुछन रिनार्य अप्री कदिया मुन्दत्र। পভিন্ন দেবার রভা রজনী বাসর॥ কৌশল্যাভনয় স্পার সুমিত্রানন্দর। পরিবেন বৃক্ষাল হাজিয়া বসন।। পুরে ধ্রছাল শরতূণ লোভে আর। বামকরে খতুক মন্তকে জ্লটাভার।। नान। करहे वरन वरन खरम जिन सन। विज्ञकृषे रेमरम निम्ना निम महमन ॥ পত্রের কুটীর বাদ্ধি বঞ্চেন ভথায়। বঞিলেন কড দিন কথায় কথায়।। ক্ৰনে জনে উপনীত মধু চৈত্ৰ মাস। क्क नरमी छिथि भभी मूळकाम ॥ সেই मिन द्वाघरवन्न समाजिथि रुन्न। লক্ষণ মাইল বলে ফুলের জালর।। ऋकवि त्रिकिट्या युक्ति मिन गाउ। बीबारमङ हामगीमा ब्रह्मि स्माद ॥.

#### সীডা সহ জীরামের কথা। পয়ার।

आरक्ष करिया ताम कन कानकीरक। चाकि रक् दूश्य शिरत इट्रेन मंत्रीरत ।। জগতের লক্ষী ভূমি শুনহ বচন। तिहे कथा नाहि सात्न धार्गद्र अन्तर्ग। ভোমারে কহিব ভিম্নে গুন দে ভারতী। श्रीयायनवयी जना ननांछनी किथि।। আজি মম আশ হেডু শুভদিন হয়। क्यापित्व नान। मूथ जु: क्ष क्यामग्र॥ विश्वी पतिल जान मर्काहाद हीटन। কে কোথা বা সুখতভাগ করে জন্মদিনে।। দেবতা ব্ৰাহ্মণ গুৰু ভঞ্চন পুৰান। অশ্বসিনে করে থাকে জগতের জন।। नान। मिछे अब जुरक्ष नाना क्लोड़ा करता। বাদা গীত নুজ্ঞ করে হরিব অন্তরে॥ (य (रमन मिट्टे में कुर्या (मर्थ मह। खन्म निरम करत्र की छ। (समन महार ॥ বিবিধ কুসুসমাল। বিবিধ ভূষণ। পরিয়া সুখেতে ছিল করয়ে যাপন 🛚 🖠 क्षिति थियगि अमा आमि कि कतिया বিধাতা ৰঞ্চিত মোরে কোথা কি পাইব॥ वमहात्री कृष्य चामि वस्ट्रे द्वः विख। ates no star fare stafe afec u

खाना यम मृत्यंत्र कण्णना कत्र मञ्जी। আমিহ ভোষার স্বামী তন গুণবভী।। करब्रक्ति महिस अरक छात्र दमहादी। আমা হৈতে কিছু मुখ नहिरद ভোমারি। रमाशि मछीत यामी अछामृग रहा महाद्वांगी कुठ खड़ भूर्य इताणव ॥ कि पढ़िल मीनहीन अस नाहि घरत। ভথাপি সভীতে কোখা পতি জাগ করে । পতির দেবার তুলা নাঁহি আর পুণা। ষে না করে প্তিসেবা সব ভার সৃষ্টা। পতিলেবা মহাপুণ্য বেদে কয় স্থির 📗 পতির সমান গুলু নাহি রুমণীর ৷ পত্তির বে অভিনাধ বাতে পূর্ব ইয়। मजीव मानम वर्षे तुक्ष हम नेम ॥ ভূমি মম প্রিয়ডমা মিরূপমা গুণে। শরীর শীত্র হয় তব এণ গুলে।। আদ্য মোর জন্মদিশ শুভক্ষণ অতি। আমার মহতী পূজা কর ওণবড়ী।। বসিকের সার বুজি জানিয়া নিশিচত। व्रक्ति (क्यांद्रनाथ श्रीदांगठविष्ठ।।

### রামরাস।

প্রীরামচস্ত্র প্রতি সীতার উক্তি। তিপদী।

গুনিয়া জানকী কন, এ দাসীর নিবেদন, তব জগোচর কিছু নাই:

ষে দেখি ফুচখের দিবা, কোপায় পাইব কিবা, বল কিবা করিব গোসাঞি॥

গুন অংহ দয়াময়, সেই দারী ধক্ষা দ্যু, প্রতিধার্ম রক্তা ধেই জন।

বিশেষ জানিরা মনে, স্থার বা ভড়ীগণে, ভেয়াগিত্ব ভোষার কারণ !!

ংগিনীর বেশ থরি, কাননে ভ্রমণ করি, ভূট্রাছি নিযুক্ত সেবায়।

व्हितिया र्किमात बूब, क्रिय सात स्त्र मृथ, क्रीयम नेर्लाझ दांकालाय ॥

মনের যে অভিনাধ, ভেবে নেখ শ্রীনিবাস, কেমনে মহতীপুঞ্জা হয়।

কোথা কি পাইৰ হরি, ভাবিয়া গুসরি মরি, কি করিব বল দয়াময়ী।।

क्षत्रपाठिथित पिरत, भूषी हम्न धनहीरन, मक्षा वर्षे मर्काशास्त्र क्षारत।

কুৰ্গতি বাইবে দূর, চলহ জনকপুর, বিধিমতে পুজিব সেখানে॥

खनक खननी चारह, कहिश जीरमद कारह,

তেষার জুড়াবে প্রাণ, জামার থাকিবে মান,
কি কাজ কানমে রখুবর।।
ভাতে ৰদি মন নয়,
কি করিব দ্যাময়,
কারে কব বিদর্গ,
কারি জালা প্রতি,
আমারে ব্লহ্ জন্তিভ।
তোমার সেবায় রই, নাহি জানি ভোমাবই,
ভবে কেন কহ বিপরীভ।।
বিবরিয়া রামরাস, প্রত্ত সমান ভাষ,
প্রবংশ প্রিত্ত দেহ হয়।
ভাবংশ স্করের,
সিক্টারনাথ বসু কয়:।

সীতা অকৈ শ্রীরাদের বিদয়োজি: রাগিণী ভৈরবী। ভাল ধেমটা।

বেদাগনে, তোমার মহিনা শুনেছি, সেই সে ভর্মা মনে। কুপানিয়ি সনাতনি কুরু কুপা দীনজনে॥ স্থাই স্থিতি কি প্রানর, তোমার ইক্ষার হর, কারণে বায় ভব্ভয়, তাই ভাকি প্রাণপণে॥ গ্রু॥

### রামরাস।

#### श्रीप्रदि ।

জীরাম বলেন জিয়া খন মম বাণী। ভূমি যে বলিলে ভাহা সন্থা করি মানি।। भिष्ण नटक किन्छ (य ततिहम नव नन्छ)। প্রবণ করেছি পূর্বের তোমার মাহাক্যা।। বিশাখিত মুনি আর বশিষ্ঠ ভাজন। आंभारत करिन कृषि ७% महात धन ॥ व्यरान करमहि कृमि खिल्नमाहिनी। অগতের শক্ষী ভূমে ত্রিলোকভারিণী।। श्रिक कहिर्छ भनी उत्क रह खन। ভোমার হতেক হণ গুলেছি লকর। অনকের রাজনক্ষী প্রধান প্রকৃতী। ব্ৰহ্মা বিষ্ণু মুহেশ্বর ভোমাতে উৎপঞ্জি।। এ সর লক্ষণ তার করিয়া শ্রেবণ। স্থৃহিত্ব ভোমারে প্রিয়া সেই সে কারণ॥ किन्द्र ভাবি মুनिरमत वाका देश जुन। ভাবিয়া ভাবিয়া প্রিয়ে জীবন আকুল !৷ ভাত এব চাহিয়া রয়েছি তব সুধ। 🔺 হেন সভীর পত্তি কেন পাই দুঃখ।। चात्र এक कथा रशि श्वन धारनचत्री। रुखिन। नगद्र चामि यटक नगदी॥ পৃথিবীর বভ রাজ্য আছ্রে সুন্দর। त्म मनात सरधा (ब्येड सरमाधामगढ़।।

পুর্বেতে কয়েছে যড় দেবতা গোদাবি। ভপ্নবংশের ভূল্য বংশ আর নাই ।। क्रे १०७ अस २०भ ना कवि रागन। विश्व स्ट्रिंग्डरण मृत्यंत्र कांद्रपे । সকলের শ্রেষ্ঠা ভূমি সর্বর ওপরতী : हराष्ट्र आभाद सार्गाः सनकमस्रु ।। सनह এप्रिंग स्वामि डारि निनि मिता। कागांत वांशिया वत नां करत्र हि किदा ॥ महामान। महारम्य नकरमञ्जात । क्र १ए जब भू क्र वीय महिमा क्राभाद्र ॥ দেশহ ভোমার ক্ষতে কি ভাবের রঙ্গ। সে হরের ধনু আমি করিয়াছি ভঞ্চ । তোমার লাগিয়া কর্ম করেছি ছফর। পর্ধরামের সহ যুদ্ধ নির্ভির 🛚 এ विधि वुकार धनी छव छारनामग्र। ব্রাজ্ঞারত হয়ে মোর বনবাস হয় !! शृह्णां कति अहे अदिणियू दन। যত কিছু দেখ তব ভাগোর লিখন।। পিতার হইল মৃত্যু মাতা পান ছঃব। শক্রত্ব ভরতের মনে নাহি সুখ।। . तन्तर्भत स्टेग्नाटक कुश्थक जलत । क्त विनार्श्वत कृश्य कहिएक विख्त ।। . अभात्र रहेन इः५ कि करिन भात्र। छव जानगरम अहे हहेन जानात ।।

्रिकशी खननी चीय मृत्यंत नानिशे!

शिवात निकरि दोखा नहें न मानिश् ।।

खत्र के नित्र के तांखा जननीत मनः।

मञ्जा के त्रिया स्मारत शोकाहे न वनः।

किनित के करण के खादि होन दूर्थः।

किनित के करण के खादि होन दूर्थः।

किनित के तारण वृद्धि रिक्षां के देव्यु ।।

मृतिका माजात दूर्य खानां ते के भने।

खामां त समाय सन मश्चिरकार मनी।

खामां त समाय सन मश्चिरकार मनी।

नातीत केलाल हम शुक्र स्तर मुखः।

श्वात्वत खाला लंग द्वि छात मूनः।

किन्न वाद्या समाय।

के तार किन्न स्वात्वात।

तार किन्न स्वाद्या समाव।।

के तार किन्न स्वाद्या समाव।।

দীতার অঙ্গ হৈতে দেবগণের **উৎপত্তি**।

মা অনস্তরপিণী অন্ত মায়া কে জানে: হরের জগমা জনা জন কোনখানে॥ গ্রু॥

প্রার ৷

শুনিয়া রামের বাকা মলিন বয়ান।

তঃখেতে কহেন দেবী শুন ভগবান।

সকলি ভোমার ইচ্ছা ভূমি ইচ্ছানয়।

ভামারে লাঞ্জনা করা অসুচিত হয়।

ভোষার লাগিরা হই কানমবাসিনী। আমি কি হইতে পারি ছুর্গতিনাশিনী॥ ভোমার অধীনী দাসী নিজ বস নর। हद्वल्याम् मण्डि हिंद्रमिन द्रम् ।। ভালিকে হরের श्रम् सानाहरन स्मात । करव तम अरखक कर इतमुखे त्यांत्र if ভোমারে মেবিতে আমি প্রবেশিতু বন। क्थन आमिना किছु विना ७ हत्।॥ **उ**द्ध वृद्धि मात्रीद्ध कहित्म महामत्र । ভোগার মহতী পূজা যাতে আজি হয়।। এখনি করিব তার বিবিধ বিধান। जाशनि चुद्रांत्र शिया करत अन स्रोन !! . १८ इत्रल शांटक यपि अ मानोत्र मनः। बरकान जाण्डवा कथा कतिवृ अथन।। ৰভব ৰাভড়ী পদে করিয়া প্রণাম। তোষার মহতী পূজা করিব হে রাম।। श्विद्या द्वाचर खान कत्रिराद्य जान। अवादन करदम मीठा श्रृक्षांत्र मसाम ॥ नचान निप्रांटक् तदन जानितांट्य कन। विरमय बुखाल (महे ना स्नारन मकन।। নিস্থাস ডাজিয়া সীভা দশদিকে চায়। क्षत्रित समझन दिक्शांत छात्र॥ कहिएं बुक्कां जन महिन्छ मनः। देनी एक अभिने देख जानि विवर्धन ॥

নেত্র হৈতে বিশ্বকর্মা হইল বাহির।
'লোমকুপ হইতে ভৈরব মহাবীর।।
শ্রীরাদপদান্ধ হৈতে আপনি কেশব।
নীতার দক্ষিণপদে ব্রহ্মার উদ্ভব।
কাভিপথে জনমিন্থ আমি মহেশর।
করপে ভেত্রিশ কোটি জন্মায় অমত।।
ভানকীর চৌদিকে খেরিয়া মোরা সব।
বিধি আদি বিধিমতে করিলাম স্তব।।
কি কেলু আদেশ কর ইমেছি চঞ্চল।
কি হেতু স্জিলে এই দেবতা সকল।।
কি কর্মা করিতে তব হইবে এখন।
কহিছে কেদারনাথ গুন দিয়া মনঃ।।

দেবগণের গ্রুতি জানকীর অনুসতি।
রাগিণী থাখাজ। তাল ধিমাতেতালা।
মানসে ভাব সে দুর্বাদলভাম। বদনে, বল
জয় ড়য় রায়, রবেনা যাতনা আর, অস্তে
পাবে মোক্ষধান। রামনামে পাপ কয়, শমন
দমন হয়, ভাবিলে সে পদধয়, পুর্ণ হয় মনজাম। গ্রুয়া

পয়ার। হাসিয়া **আনকী কন শুন** দেববাগ়। আ**জি** ঞীনবমী তিথি দিন শুকুক্ব।।

শীরামের জন্মদিন এই চৈত্র খাস। ভাজি দে কইবে আমার জীরামের রাস ভোমতা উদেঘাগী হয়ে করত উপার। আমার মান্য সিদ্ধ শীভা হয় বায় । কানন কাটিয়া কর শ্রীরাসমগুল। শতেক ৰোজন তার পরিমাণ স্থল।। বোড়শ যোজন উর্জ্যে দেখিতে সুন্দর ! পাষাণে নির্মাণ কর স্থান মনোহর !! क्षिएक कुभूमवृक्ष दिश्यन कविछ। ভুবনের শোভা আঞ্চি শহত হরিয়া॥ নানা দ্রবা আয়োজন করহ ছবিত। रिधि प्रथा कीत्र मह जामि मत्नामी छ ॥ স্থানহ বিবিধ খাদ্য বাদ্য নানা মড় ৷ আৰু আৰু কৰ কত যাহ! পাৰু যত।: শুন শুন বিশ্বকর্মা আর ভগবান! भारतारकत्र मम कत श्रुतीत्र निर्म्मान ॥ দ্রব্যের সুযোগ জন্ম পাঠাইয়া দুত। অতি শীন্ত রাসমঞ্চ করহ আন্তত।। লগতরমণকর্তা আপনি এরাম। তাঁহার সহিত আমি করিব বিশ্রাম।। क्रांगमश्रद्धारक क्षीकां कवित कुलन। প্রন গম্ম কর অধোধ্যাভূবন।। **দেবর ভরতচন্ত্র আর শক্তেয়।** নিদত্রণ করি জাইস জাসিতে এখন।।

জার এক কথা বলি শুন দেব সবে।
নানা দ্রব্য মিন্টা জন্ম পাক কর ভবে।
যাতে আজি ভুত্ত থাকে শ্রীরামের মনঃ।
ভাষিত উল্লোগ জন্ম করত গমন।।
আজা পাযে দেবলণে করে মনোনীত।
উচিত কেনারনাধ শ্রীরামন্বিত।

দেবগণ কাতৃক রাসমঞ্নিমাণে। রাগিণী আমালিয়া। ভালে ধিবাতেভালা।

चार्ड, उर्भनक् (तास्त्र दाम। चार्ट उद्धन दि-होन, जामि मीन होन, मीरनद क्रॉस्न, पूराख रह अवभाम। जब नारम जबनक्तन रच वास, उरव रमन नाथ हर्ष निक्ष्णाय, चारक व्हान मारम पिछ दोक्षांभास, नाम अभि क्षविद्याम॥ कु॥ भगाव।

তবে দেব বিশ্বকর্মা ভাবিয়া তখন।
কুবৃক্ষ কণ্টক আদি করিল ছেদন।।
রমণীয় বৃক্ষ সব রোপণ করিয়া।
শুস্তুত্ত করিল বেদী অপূর্ক রচিয়া।।
শুপ্রত করিল বেদী অপূর্ক রচিয়া।।
শুপ্রত চতুক্ষোণ বেদীর প্রমাণ।
ভার পরে চারি কোঠ বুঝাই সন্ধান।।
পরে ছল্ল কোঠ মধ্যে মনোহর স্থান।
নির্মাইল দ্বাদশ অঙ্গুলি পরিমাণ।।

প্ৰিড বিধাৰ জায় কোম এক শত। আৰু সে চকিশ কোঁঃ মঞ্চ মনোমত।। লৌহ আবার তামু নিয়া গঠিয়া সুন্দর। মুড়িক রক্ষত হেমে বিস্তর বিস্তব । মণি মুক্তা প্রবালেতে লুক্ষর থচিত। नाना साछि दुक्त माना श्रूष्ण धारकृष्टि ।। অশোক কিংশুক বন্ধ মালতী गল্লিকা। कमन्द्र हम्भक छांजी गुनी (मकाशिका।। জতদী ভগর খাটী সেঁওড়ী পারুল। शक्करां विभिन्न विकास वक्सा কামিনী প্ৰাশ কুল কেত্ৰী কাঞ্চন। क्रमाचा ३ छन् अता मानती उक्रम ।। बाबा वर्त नाबा शूच्या त्रविष्ठ गुम्बुत । 电জরিয়: মধুপানে মন্ত মধুকর। আর বে বৃচৎ বৃক্ষ আছে স্থানে স্থান : পল্লবে পূর্বিত হয়ে আছে নমুমাণ॥ मान छोन छमान चटकंदु बादिएकन। रिखान की ठीन खामु बामनकी दन ।। व्यथीत अनार कृत व्यथव हन्यम । বুক্ষোপরে শোভা পার কড পক্ষিগ্র ॥ কাক চিল কাকাভুয়া নীলকণ্ঠ বক। কত আহি কপোত করিছে বক বক।। শালিক কাজলা সুরি ফিলা হরিডাল। मन्त्रा वायुरे जामा क्लमा विद्यात ।।

भरमात्रांक्रां भानत्वीक्ति वास्त्रदोति विष् সমূর চকোর শুক ঘুঘু ছাভারিয়া। ভরত বটর জার ময়বা গগুন। ভীমরাঞ্চ পাপুই চাতক হীরামন।। এই রূপ পক্ষীরণ ভাষে ভিত্তর। माश्वास्त्र मिन्यस मध्य मान्द्र । ছেবিয়া নথেত শোভা কার সাণা কয় . **(यन क्योरिं5सा सूर्य। इत्या ह**े छेपा। ।। हार्वि मित्क वांखिएक कीहरू ककरध्यु । अध्यक्षक करखान कृती (अती ८ नु ॥ मामन मन्मिता तांभी तांटक तीना जय्हा। শন্তৰীয় কর্তাল আরু জগরাম্প।। কোথায় লুভাকী লাগে কোপা গীত গার। জ্মাসিয়া বিবিধ ভীর্থ যোগাইল ভায় 🗵 इहेन भविज हैं। हे शिलांक छ्टेस्ड। বসিয়া জানকী দেৱী চান চাবিভিত্তে।। चास्तामिका इत्य (मनी कारन उनमा শ্ৰীরাম চরিত্র গীত কেদার রচন।।

সীতার অংক দেবগণের নিগু।
রানিণী মূলভান। ভাল কাওয়ানি।
নল বল জীরাম নাম বদনে। বল বদনৈ বল
বদনে। হবে চরমে পরম গভি, এড়াবে শমনে। এতেক যন্ত্রণা ভোগে, ভবুত চৈতন হলো-

না। অসার সংসার এই জেনেও কি তা জানু না। হইবে মায়ার দাস, কর নানা অভিলাধ, না খুচালে কর্মফাস, কালের সদনে।। জ্বনা প্যাবে।

मरनाञ्ज इ। नमक्ष धाञ्चल (प्रियः)। হতৰ আসৰে নীড়া ব্দিল হাসিয়া ৷ उन्ना आणि (प्रवर्गालं काइन कथन। তোমরা হে কৃতকার্যা হইল এখন। अथन नामन कह इट्गा मुख्यित। र्थ रथ अन्न रेडरक भाव इरव्रद्ध गहिद्र ॥ अधिन काशिद (महे बचुमनि द्राम। রামের সহিত জামি করিব বিরাম।। যখন আসিয়া ইথে বসিবে গে:মাঞি मलत इहेरव धना धना कहे हैं। है। আজিকার দিন ধনা ধনা ভিথি আব। তোমরা হুইবে ধনা হেরিয়া বিহার ।। आबादत वलेश वाटम विभावन द्वाम ! তখন বাহিত্ত হয়ে করিবে প্রশাম।। গুনিয়া দীতার আৰু যত দেবগণ। कानकीत जन मरधा लिख रूप दन।। বে অঙ্গ হইতে হয় যাহার উৎপস্তি। . भहे अब मत्था रेहन छाहात्र निवृश्वि॥ #≷ त्रश ठिज्ञकृष्ठे रेणरक कि मृत्यक । . विशास करवन मीड़ा मध्यव खेलन्न ।

# ब्रामद्राम ।

গোলোক হইতে শোভা কোটি গুণ ভায়। কত কোটি চন্দ্ৰ সূৰ্য্য গডাগড়ি যায়।। কিবা বুক্ষ পরিপাটি কিবা স্থল জল। গীপুর্বে রচনা দেই এরিাসমগুল। লীরক মুকুত। আর মণিময় সার। চারিদিকে চকমক শোভা চমৎকার।। কোথায় জ্বিছে যদি কোনখানে হীরা। পশিয়া কাহার নাধ্য জাঁখি লয় ফিরা ৷৷ ন্মত মজিয়া যার প্রাণ হয় নত। অনুমানি অমস্ত কৃহিতে নারে তত।। তবে রামচন্ত্র স্থান করিয়া স্থতিত। পুনৰ অন্তরে আনি তথার উদিত। द्वन्तर्गादेश स्माद् गुक्त महसीवकाषा । জানিতে নারিল রাম জানকীর মায়:।। शृद्धक पर्वकृषित ना मिथ उथन। উড়ং করে ভার রাঘবের মনঃ।। (वामन कविष्र) वाम ठाविमिटक हान। कांनकी गणान (माँदर (मधिए ना भानः। কান্দিয়াহ কন কপাল বিশু। क्राध्यत खेलात् क्राध्य क्ट्रेस विश्वत ।। রাজ্য নাশ বনবান পিতার মরণ। क्रिंग (म भव (मान् हरेश बाद्रण ॥ मुंकवि इभिकास युक्ति पिन गात्र। শীরাম চরিত্র শ্রীত রচিল কেদার।।

## जीदांगहरस्ट्रद (तामर ।

वांभिनी हासिछ। जोन स्नम (उडान:।

यः जिल रत निधि गोरम । शहीत दिवामी थाउँ, काहात कि करत मारभ ।। धर्मित विश्व मात्र अब स्मित्र विक्रमाय, स्थाम स्वित होत्र होत्र, कर कांग ध्यान कीरम ॥

ट्यू जिलमी।

द्रांकितत्वाहर, ना १३८व वाणान, का १३विया खानकीरद्र।

চল্জে বড়ে শীর, মনঃ মহে ছির্, কোপা বা যাবেল ফিলে:

কান্দিয়া কহিছে, জীবন সহিছে, কোথায় লকাণ ভাই।

জন নুরপিণী, **জনকন জিনী,** কোথায় যাইলে পাই।।

काश अहर मीटिं, आमादि नानिटिं, क्रिकास ब्रह्म बरन ।

ক্ষাণ কোগার আসিয়া কেখার দেখাকর মদ সংন।।

রাজা গেল দূর, সে অঘোখাপুর, ভাজিয়া আইসু বন।

(छामाप्तित भूष, व्हारत हम मृष्, मणुबा पहि स्त्रीतम ॥

अहे **इ**ल्ल मत्त्र, ना श्रांति कि दुःस खानकी कांशा वृद्धित। धानाम खानहि, कडरे बार्निश (छई वृश्वि जुकाई ला। এ কার ভবন, বিচিত্র শোভন, किनिया आत्याकानुती। (कांश) विळाकू है,
मनन गुक् हे, এ শোভা চেরিয়া বারি ।। আণের সোমর. শব্দ দেখির, आंभिया (मथरत जाहे। क्षित्र (माकानरल, भात श्रीन करन. वन्द्र (काशांस याहै।। नाहि, कान मुच, ভাগো মোর ছঃच, न्। धानि निधन कछ। त्रांकपूंख हरे, वन मात्य तरे, ভেবে প্রাণ ওঠাগত।। ভাই আর জায়া, সব এক কায়া, ভিন্নভাব ৰাহি তায়। এ (हम त्रम्भी, डाई खनमनि, কোথায় হারাতু হায়।। এकथा श्रमिटम, अंभरत स्नामितम. त्र्भिक् वाँहित्व नाहे। नृशाहेरन कथा, कि वनिव छथा. ं स्कीनना। माध्यत्र ठाँहे।

আরেরে লক্ষণ, কেন আসি বন, পোড়াইলি শোকাগুণে।
কেদার কহিছে, জীনে দ্বিছে, বাদের গোদন শুনে।

পাথ মায়ালক্ষণ কৃত জীরানচন্দ্রের প্রবাধ।
রাগিণী ভৈরবী। তাল কাওরালি।
এত কাতর হয়েছ কেন রাম। রখুমণি, জাগং
বাহিত আছে তব গুণে গুণগাম।। ওচে গুণ
নিধি, যদি অপারাধী, করে থাকি তব পদে সে
দোর সইওলা হরি। আমি তব জিন দাস,
আছে চির দিলে আশ, মুগণ মিলনে সামি
পুরাইব মনক্ষম।। গুণ।।

পয়ার !

এইরপে রামচন্দ্র করেন রোদন।
দেখিয়া আনকী তায় ভাবেন তখন।।
কে দিয়া প্রবোধ রামে বিশেষিয়া কল্প।
ক'লগান গিরাছে বনে কলের আশায়।।
তবেত আনকী দেবী ভাবি মনে মন।
দেহের মারায় করে কক্ষন স্থান।।
অমিলা ক্ষণ বার শ্রীরামের পাল।
বলে আজি প্রভু কেন হয়েছু উদাস।।
আজি কেম দেখি হেন মলিন বল্পান।
বলহু দাসের প্রতি কুপা করি সান।।

কাহার লাগিয়া কান্দ হের দেখ আয়: ° এই যে লখাণ আমি নিকটে তোমার 🤢 ्डामाहि निक्षे इंटे छामाति किस्ता। (कामोत भिवसि (यन शास्त्र करणस्त ।। ভোমারি লাগিয়া আমি বনচারী হই। ভূমি রাখ ধেই কালে সেই কালে রই ।। ভোমারি চিজিড **জামি ভূমি যো**র সার । পঁপেছি জীবন মনঃ চরণে তোমার।। भारम्भि गांधनकार, उत्रभा त्व छात्रे । ছাড়িয়া ভোষার সঙ্গ আর কোপা ষাই । তোদার জানকী প্রভু ভোমা ছাড়া নর। ভূমি ভার দে ভোমার কো; জার লয়। श्रीतामु नरमन नन काथाय सामकी। कानकीत जब कारे जुमिटत कान कि।। अहे (य भागात साद्य कविनाद्य सान। বিলম্ব দেখিয়া কোথা করিল পয়ান !! কোখার আইকু আমি গাই চিত্রকুট। काथांत्र सानकी सात माथात मुत्रहे ।। এই বা কাহার পুরী স্থান সংমাহর। मध्य भारताक रेहरछ ब श्रुती जुनात ।। কিবাসৰ ভব্লগণ কিবাসৰ ভাল। পল্লবিত মুক্লিত সুশোভিত ভাগ।। वर्गमत्र भूतीवामि मत्रि कि निर्माण। (यन क्राइंट्स्ट् डाई लिएलाई निकान।) লেখেছি জনেক ঠাই না দেখি এসন।
কে বৈলে গৃন্ধরী হছ বেদীর উপর।
কিবাকেশ কিবাবেশ রূপ মনোহর।
কেনা কেশ কিবাবেশ রূপ মনোহর।
কেনা ইলে কেন গুণের ১ কুর।।
কে দেখিলে স্লানগ্য রূপ মনোহর।
কোনার জানকী এই বেদীর উপর।।
কৈত বলি জন্তর্থনা হইয়া লামাণ।
ভানকীর জন্তে অঙ্গ লুকায় তেখন।।
বিষয়ে বিশের গতি গুনি পরিচয়।
ক্রীকেদার নাথ বসু রামরাম কয়।।

জীরামচন্দ্র প্রতি জানকীর প্রবিচর। রাগিণী জয়জয়ন্তী। তাল গাঁপভাল।

নাপার চিন্তে চিন্তামণি তৃমি প্রাণকান্ত। শাস্ত মুর্ত্তি ভ্রান্তভঞ্জনের একি ভ্রান্ত।। মরিং একি ভাব অসম্ভব, কত ভাব মনে হডেছে উদ্ভব, এ ভাব ভাবিয়া নাহি পান ভব, কেদার কি আনে ভান্ত।।

जिल्ली।

जारमञ्ज्ञ छत्रम धड़ि, सामकी विमन्न कृति, वरन सम्म सम्म सम्मनिः। ्के ह्डू द्वापन कर्, 🔧 अथन देवब्रक्ष धन्न, আমি নাজ: ভোমার রুমণী গ पुरुषात बाद्धा इत्य. विहास कि जालि नाम. निथा छाटन मा लिनिटन जोग। ১০ বৈর দংগী হই, চরণপক্তকে বুই, कुइचिनी स्थानकी त्याद नाम।। अन्रुमिनी आभि, जूनि ए सामात्र स्थिते, पिनभनिकृत्त्व क्षाम। अरक्ता आमारत ताबि, तिहे त्य कमन औति, কুমি গেলে করিবারে খাম।। ভোলার মানল ফেই, স্পামার বাসনা দেই. লক তিথি দিন ওভক্ষণ। कक्षणां करिया नाथ, जानिया जामांद्र नाउ, देश की देखन चामरन ।। मानीत खिल्लाय, कतिवादत ज्ञामत्रान, निद्रमन जूरन माहन। পুণ্ডিধি শুভক্ষণ, আজি কর শুভক্ষণ. दिखन्न कंदन्ति जारमास्त्रमा। श्मित्रा द्वाचर कुन, जाशिन मामाना नन, ু . জনকের রাজলক্ষী সীতা। थित वरलाक् बाहा, अथन वृक्षिण छाहा, मटा बर्छ पूनि बाका गीउ।।। (यमन करत्रक साल. (उमनि इहेरद द्वांग,

ভাল তব করণা ভরুস।

 (कम्यान अभन क्षांत, कि कड़िल निवस्ति.) कामी व छमव देश सम ।। किया श्रम किया खन, किया युक्त किया मन किन वाममधन मुख्य : दिनिशारक माहि माहि, किवा शकी विभारी है चर्गमय शूंडी मटमारुह !! नीवक नाहित्स् नाम, मधून मधुन छान, नां हिट्ट नुकाकी महनावदा। (मिश्रा श्रविशा गत, शूर्व कीर्छ मरहाश्यत स्त्रामिनाम कृति भवारभदा।। आंतरी कहिएक तांग, वर्फ किकू छनधाम, ভোমার চরণ জিল্প নয়। (राष् आरक्ष मिक्ला, तुन स्म मिश्हामन, यपि के शाम मि ब्रम् ॥ **ও পদ ভাবিলে সার,** किरেगत ভাবনা তার, धन कन मृत्यंत्र मधन। শুনেছি নিৰ্বাণ পায়, এ অতি সামান্য ভায়, কি হেতু জানিয়া কর ছব ।। क्यांनिर खट्ट दाम, ह्यांन रहिया चाम, গঞ্চার উদ্ধন হৈল তার। क्सारत ब्रहिट्ड भीड, युक्ति मिन मरमानीड, मुक्ति इमिक्छ्य दाष्र ॥

## গ্রীরামের রাসনীলা।

় রাগিণী জ্য়জয়ন্তী। তাল ঝাঁপতাল:
কি শোভা জীরাম বামে, সাজিল গরা নন্দিনী।যেন নবজলইবে, মিশিল দৌদামিনী ॥
সুশ্বনি সহ সুরগণ উপনীত: জ্বিগণ জাগ
স্বানকরেন স্বরিড॥ জগতে সামশ সবে
ক্রেবাড়া ভ্রি॥ প্রণ।

প্রার।

करेक्ट्रभ भीखारमधी विख्य किया। মঞ্জেতে উচিল সতী রাখবে লইছা !! मिथिन स्नाम्हर्या होम होसित्क खाहान । রামময় মঞ্জানি অতি চমৎকার ৷: १४ मिटक निवृत्य (भरब (महे मिटक दूर्भ) विकास करेशा द्वाम खाद्य खरिदाम ॥ এমনি সীভার মারা বুমে কোন জন। कांकत हरेन छाति खीरधूनक्ता। অধিল ব্ৰহ্মাৰ সুৱে যাঁচার নায়ায়। বুর্ঝিতে সীভার মায়। তাঁর হৈল দার।। বিশা ঘোষে রাঘ্য সীভারে কল মঞ্চ। **ভেঁই মে ঘটিল এ**ত মায়ার সম্বন্ধ !! खरुद सामिया गर इट्या विस्तर। मर्थां विमन मनदृश्यत् जनह ।। उपन समस्त्रुडा आंत्ररम् डानिया। . বসিল হামের বামে হাসিয়া হাসিয়া।।

পতির কমলপদে সমর্পিয়ে মতি। পথেতে চরণপথ পুঞ্জিলেন সতী !৷ **ভবেড কমল পদে করি নমস্কার**। बिरवमन भिक्के आह अर्थिय श्रकांत्र ।। बर्जिश मरनानी छ शृंख्या हदत । खाउः भव खानकीव कुष्टे रेश्न मनः ४ विद्रारक कुछन निम माझ्कत छेला । किरा नरनीतकास्त्रि श्रीताम भूकत् ।। रामकद्र ध्रुक विकित कद्र गदः। अश्वक हमाना मिल लीनक दलदर ॥ **চরণকমলে (४८ल** রবি আর শশী। বিরাজেন রামচন্দ্র রতাদনে ব্যা। करव जोका स्वतिरामन श्रुक्त रामवन्तरा সীতার স্মরণে সবে আনক্ষে মগম। বাহির হইয়া ভব করে নানা মতা এক মুখে বিশেষিয়া আনি কর কত।। ठादिनिक मल्डन (विज्या मिनगन। রাম রাম ধনি ভারা করে অমুক্ষণ।। अक ब्राम नारम करन हजूर्वर्श कन। कानिया निदर्भ क्रम (भरका भरता।। क व्या छेहाद्य हिंद ऋल्य किन्ना। नवपूर्वामनभाग उच्छन वत्रन ॥ कि तारमद भाष्यमा किया हुन क्रा পর্ম श्रद्ध निधि शद्ध मृत्त्व ॥

জাজি কি পরম ভাগা হের দেখ রাম।
নয়নে দেখিত্ব গোরা নবঘনগাম।
ঘেমন সুন্দর রাম জানকী তেমন।
কখন নয়নে মোরা না দেখি এমন।
নারীর শীডণ হৈল ফুড়াইল আছি।
ইফা হয় জদম মাঝারে গেঁথে রাখি।
এইরুংপ কছে দবে আনন্দিত মনঃ।
ব্যেরাগণীশা গীত কেদার রচন।

সীতা নত্বামচন্দ্রকে দেবগণের স্তর।
রাগিনী জয়জয়তী। তাল না পিতাল।
দিনখণিকালান্তব, জয় রমুমণি রাম। জাটাগাঁনী রাজীনারী, নবদূর্বাদেশপাম।।
জয় ধকুর্বাণগ্রনী, জগজন দর্শহারী, ভুবদের
হিতকারী, সর্ব্বগুণে গুণধাম।। জয় দেবারি
নাশক, সর্বদা সভ্য ভাষক,নীভার মনঃ ভোষক, হইও না কেদারে বাম।। গ্রন্থ।
পশ্বব।

সহস্রবদদে মহাবিষ্ণুর উদয়।
শঞ্চক্রগদাপঅধারী দয়াসয়।।
ভকতি ভাবেতে পারে মুক্তির বন।
সীতা সহ রামচন্দ্রে করেন তবন।।
নমামি আনক্রীমাথ প্রথমামি সীতে।
বামনা আমার দনে চরণে পশিতে।।

बारदक कदाना कद खामदा करान । ग्रन्त्र क्लाबाद्ध (म्र अलग्र हरून ।। कदिरम छेरপछि (षष्ट् क्ठिंद हरेएछ। । ভোমাদের ওণ আমি কি আনি কহিতে। এই রূপে মহাবিষ্ণু করিলেন স্তব গ তখন হইণ ভবে বিফুর উদ্ভব 🛚 । মহাবিঞ্ মত তাব করিয়া বিতার। প্রেণাম করিয়া পদে হন নিক্রন্তর । **७८२८%। आहेल तुका महञ्जतम्** । সঙ্গেতে চতুরানন সাধিতীরমণ 🗤 याङ्हरस क्रे खरन क्रेस्त शृर्धाः। বিকচ অ**স্থল দিল** চরণ অ**স্থ**জে।। दरन एक कमनाकां उ त्रभूभि दाम। अखेरन कक्ना कर्व लिखरनद्र धार ॥ ভোমাতে উৎপত্তি সৰ ভোমাতে নিবৃত্তি। সেই জন ধনা যার তোমাতে প্রবৃদ্ধি।। শুন গো জানকি ভূমি জনকের সূতা। नर्स्त (लाक गृतश्चिष्ठः) नर्सक्षागृष्ठः।। मर्क मिश्वि धनामिनी मर्क द्रभमग्री। नर्सकाल दामजारी। नर्स भवा अती।। नर्ख घटि बाइ जूगि नर्खक्रमगातः। अर्थिएटव श्रृष्ठा करत्र हत्रन रहामात्र ॥ अं रिन हेका दिन इहेन मीत्र। **बकामनः क्रम भागि (मबा मिना मध**ाः) ४

### রামরাস :

• क्लारन खर्ड्ड मनी निद्र छहे। खाद्र : দীপচর্ম পরিধান স্থা্যের আকার।। গ্লায় অন্থির মাল কণী সুশোভন। রোড্হাতে দীভারামে কলেন শুবন।। ৰুমোৰুমোরামচনদ্র অধিবের প্তি। ন নত্তে জানকি দেবি বহু গুণবঙী।। कि स्नानि महिमा मीमा कदिए वर्शन ; প্রদ্বিলা মোসভায় ভোমর: হুজন :: काम नय अमर्गाय कहिन विखत। তখন আইল ই**ন্ত্র দে**বের ঈশ্বর।। প্রণাম করিয়া স্তব-করে নিপিমত। এক মুখে ভাচার বর্ণনা করি কও।। अक्रार्थ कवित खब डेश बङ्कात। ভবে আসি প্লণীমল দশদিক পাল।। বলে হে জানকীপতি ত্রিলোকের ভূপ। কে আছে ভুবনে আর ডোমার শ্বরূপ।। স্তান করিলা সব তুমি রখুবর। সর্ক্ত লোক হিডকারী কুপার সাগর। खाप्र खानेका खनएछत् धन।। ক্ষয় রাম নিজানিক অধম তারণ।। ক্ষগতের কর্ত্তা বহু জগতের দেবা। তুমি জান সকলে ভোমারে জালে কেবা॥ প্ৰবন্ধ বোডহাতে বস আসি কর। উভরে মিলিয়া দেহ চরণ উভর ৷৷

लानमानि हर्ने शक्षास्त्र सरह राम। मकी (मह्ह को 🗲 कृषि मकी 😉 १४ म 🔢 মমত্তে জানকি দেবি জগতের মাতা। বৰিতে ভোমার গুণ না জানে বিধাও।। अफ विशासमा बाह्य। इन्हें न नी हतः ष्ट्रामिण रेन्स् छत्रात् कद्रित्वन खर ॥ नत्या नत्या द्रायहस्य प्रहानकी शीखाः আপনারা ক্ষরতের মাতা আর পিডান প্রসাব করিল। সার দেবতার দল। जुलना कुलाब (मरु हदन कमन ॥ नतानं कर्तन स्वतं हत्यः नरह सीत्। नगाप्र केखदीनांत्र लाभावः नदीत्।। नत्म (इ खानकी পতি साम कि खामहन्। 🛎 তমু বিক্রয় জামি করেছি ভোমায় ।: ভোষারি চিহ্নিত জামি তোমারি কিন্ধর। (मथ (यन ज्वा ना मारभएत त्यू वर्ता। नाम देश्य : तार्यन् विस्तृत् खदन । आशिका अन्य छेन्नका नवन ।। কুরের প্রাবিয়া স্তব করে বছতর। लाहि। १ क इडनशकर छ करनवत् ॥ करे काला (मार्गाल दामधन श्रीष्ठ । ভখন ঈশান সাসি সমুখে দাড়ার॥ दमस्य वर्षभ वयः कावि पृत्र्षृत्। **ল্লবণে** লোভিত কিবা ধুভুরার <del>ফুল</del>।।

#### अन्य सार्वा

. গ্ৰদেশে শোভিড ভুঞ্চ উপটিতা। ভিজ্ঞিদাবে পূজাকরে রাম সার থীতা।। ्टन कि शहरा जब सदह अवधाय। तुरुम वर्ष रुष इन्द्र होग श्रीम ।। কি দিব ভোমার তুলা ক্রিজগতে নাই। প্রয়েখ পথ ভাবে তব ৪৭ গাই ন विषय अभाव खन एक भारत कहिएक। মোলিতে ভজের মনঃ আইলা মহীতো 🛚 এট দ্বল পঞ্চয়ুগ কভিল ভৈত্ত। एथन का गिरा बन्ता शुन्त करन छन।। र तन प्रश्च नामहत्यु : एर नदशेख्याः ত্র নাজিপশা হৈতে আমার ফেন্ম :। क्षग्रहेत्र भिखान इत्याद्य वर्णभवः কিল্ড মম পি ভাষহ ভূমি হে রাধ্ব।। व्यवस्य वर्धनां करत्र ब्रुका ख्रीशाम । আশিয়া অনস্ত দেব করিল প্রণাম।। £हेक्राल कारम कारम जाहेश कछ स्ना। কি কৰ ভেত্তিশ কোটা দেবের স্তবন।। क्रिक्त अर्था दर्ख भाभ यात्र पृद्र। রামের চরিত্র কপা বড়ই মধুর।। ষু**ক্তি দিল সূক**বি রসিক চন্দ্র রয়ে। विका किमायनाथ वसु छैलावाय ॥

ত্রীরামচন্দ্র প্রতি গ্রহণণের স্তব। আর অংর রাম, আরু সীতারাম, বলবে বদ্দে। व्यवारम इरेरव मुक्त अखदबद्धान ।। द्वाम ७० রাঘ চিন্ত রাম কর সারে: নিগানে জীরাম বিলে গভি লাহি আর । অনিতা কি কর हिस्स, रिम ताम लाक हिस्स, माहि स्पंक इस्त कारह, भगन महत्व॥ क्षा

वपू जिल्मी।

করি যোড় কর, কহেন ভান্ধর,

ফরে মধুকৈ**টভারে**।

লক্ষীম্বরান, লক্ষ্ ওপগাম.

मर्कानम् (च सूत्राद्धः। ...

(नक्ष रेइटफ फर, हरेजू क्रेक्टर,

· স্বৰ্গ ভ্ৰমিডেছি আর।

भीश कतिराजीह, भशे जिनाराजीह,

**७व शरम नमक**ाउँ।।

কুডাঞ্জনি হৈয়া, শির নোভাইয়া

करवन हस्त खबन।

(इ द्वाम द्वाघर, नक्क देहरक छद.

कत्रिकु स्त्रमा शहरा॥ हरत्र ह्रि शुक्तत्र, खर्शमरमाङ्ज,

ভোমার কুপাত্সারে।

ष्मशांत्र महिमा, नाहि पिएल नीमां. প্রণাম করি তোমারে 🖟

চিত পুল্কিড, ভাবেডে মোহিড. मझन कटतम छन। छानकीद्रभन, ब्लीद्रचूनक्त. कु भी भग (१ द्वांचर । भ्या ब ख्थ्य, याभान जेलत. **े जागा**ङ करेंग तान । ठ शरम ध्याम, कांत्र छ शिवाम. আন্তিৰ নিজ্ঞান ৷ जिनियुक्त करा, - (इ.स्घरकार, क्षिंद्य एड (डायांत। ्र कि खद कदिव, । १ स्ट्रेड देश्ट उत्स् ক্ষিণ (নতা জামার ॥ वीत के मनाडा, हिन अकतडा, খাহার গুণ কহিতে। ভনম তাঁহার, কি বলিবে আরু. প্রণাম করি পদেতে।। কৰ বৃহস্পতি, আম রঘুপতি, সভাওপের আধার। द**्रा ७**८९चंत्र, न(स्पन्न जेस्वर, अरमय नीना (जामात्।। চজুৰ্ব্বৰ্ণদাতা, বিধিন্ন বিখাতা, अ शरम कति ध्येगाम। इनार्द्ध निद्रखत, द्रक तथुवर, महानु कानकी जामः।

ভবে শুক্তা কন, হে প্ৰলোচন, ' वामाकांख (३ द्रांचर। रमरंदद व्याधात, व्याधात मुशांत. कि कव खब देश्खद !! এক শতবার, চরুপে ভেরমার, নম্পার আমি করি। जिल्लाक क्षेत्रज्ञ, स्मारत क्या कत, **6िकिंड जाबि (व इदि।**। कम मरिम्छतः ् द्रध्रश्रमञ्जू श्र शहरकः स्थाप्तिकः এই গণপতি, মানামান অভি, इत्य कर चारमरभटक।। क्रम पृङ्ग छग्र, नावि नगीम्बर ্ প্রার্থনা করি এখন ৮ नमा नर्ककरन, 💎 🧸 अ इस्मिहदूरन, খাকে খেন নেবুর মনঃ !! कति (बाष्ट्रभावि, त्राष्ट्र कटर रावी, नत्मा ताम खनार्मन। यत (मरामूद्र, मिश्रन मिश्रुद्र, कदिशादछ वजन।। ভোমার ঘর্মেডে, বিশ্বধা তা হতে, खित्राहित छथन। त्र मुधी बोहेग्री, जमत स्टेग्री,

তোগাইৰ কৱি ভজন ॥

**जाकृत दिखते, . कि क्व रम** मय. धना मन् जुमस्ता। द्वन मनज्ञ, नाहि ছাড়ে गन, अ श्रेम श्रेष्ठामाल ॥ क्रि थांफुशानि, क्रिकु करह वानी, या रथ तदर खीरन। ভাৰৰ প্ৰযান্ত, ভোমারে একার, कतिव जामि भारत ॥ সহ**স্তেক বার, সক্ষ কোটি আ**রু, खमञ्चा कहि क्षांगाम। রক্ষাকর দীলে, পাদর জাধীনে, রাশ নব্ঘন শ্যাম।। শীরাম চরিত্র. পরম পবিত্র, अनिटल भूगा छेमग्र। অহত সমান, সাধু করে পান, **बिटकमा**त्रनाथ कम् ॥

শ্রীরামচ**ন্দ্র প্র**তি মুনিগণেয় স্তর: রাগিণী **স্বয়স্ক**য়স্তী। তাল বাঁপেভাল।

হে তপৰকুল উজ্জ্ব রাম রাজীবলোচন।
শান্তমূর্ত্তি ধান্তহারী, ব্রিডাপ ভন্ন মোচন।
পুরুষ প্রধান কর, বিশ্বপতি বিশ্বমর, সনাতন
সক্ষাশুরু বেদের বচন। প্রীপদে গক্ষা

উৎপত্তি, শিলা হয় মানবাকৃতি, কেদার-ন্যথের গতি, ঐ রাঙ্গা জীচরণ।।

भेषांत !

फ कि लांदि शुनिनेन करत्र खटन ! भट्या नत्या त्रामहत्तु छ नकीत्रम् ॥ " সর্বর্মান্ত্রময় ভূমি ব্যাপ্ত **ত্রিলোকে**ভে।। হয়েছেন প্ৰতিগন্ধ বে বস্তু শ্ৰুতিতে ; भक्तिमानम् ब्रक्त विज् मेनाउन। সকল শব্দের প্রতিপাদ্য ডিলি হন।। তার প্রতিপাদা প্রসূত্রিয়াছ ভূমি। নির্বাচনায়ক স্বর্ণ রুমাত্র ভূমি ।৷ নিত্যানশ নির্ফিকার চরণে তোমার ; 'অসভাং নতি মন স্বাকার । নারদ কাহন সত্য স্বরূপ আপনি। ক্ষণতের রক্ষাকর্ত্তা সভ্য শিবিখনণি।। সভারপ সমাতম চিন্তার শ্রপ। সভা ব্যক্তি জন ভার সভাের স্বরপ । এবস্তুত ব্ৰহ্মময় জিলোকের স্বাদী। 'প্রপদে প্রণাম তব পদাব্রিত আমি।। বাজ্ঞীক কহেন হে বাঘৰ ব্ৰহ্ম হরি। ভোমার যে নাম ভাহাবিপরীত করি !! জহর্নিশি রাম রাম করিয়া ল্লংপছি। ৰাসন্তণে সভাব্ৰহ্ম প্ৰাপ্ত যে হয়েছি॥

মহাপাপী দন্মকর্ম। ছিন্তু ছরাচার : •হট্মু কুডার্থ নান্যাহালেয়া ভোমার ॥ যদি তব নাম আমি প্রকৃতরপেতে। ঞ্চপিভাগ রাজ দিন ভক্তিভাবেতে। কি পর্যান্ত হৈত তাহা বর্ণিতে নারিছু। হৈ প্রভূ আমি যে তব আপ্রিত হইসু। রক্ষা কর যোরে জামি কিন্তর ভোমার। বিষ্ণু চরণপথে করি নমস্করি।। ধরণী লোটীয়ে কল বশিষ্ঠ ভাজান! ভূমি রঘুবংশের নায়ক সুরঞ্জন।। বিনাশকার্ক নিডা সভা সনাভন। •তব গৃক্ৰপুল্ধ আছিল যত জন।। পুরোহিত ছিন্তু আমি তাথা সনাকার। कुला कर 'इद शुरम कवि नमन्द्रात ।। এই নিবেদ্য করি অভিম কালেতে। श्वान पान पिछ द्वांका हद्वनशत्वारक।। नामरमय कन नरमा बचा हपुरत । কে জানে ভোমার জন্ত থেদে অগোচর । বেদান্তবাদীরা ব্রহ্ম করিয়া বলেন। ভার্কিকেরা পরব্রহা করিয়া কছেন।। বিশেষবাদীরা যত প্রকৃতি কংইন। সাৎ ব্যবাদী মতে পুংস করিয়া বলেন । পাতপ্রলবাদীরা যে বলেন কারণ। বীমাংসক মতে ঈশ হুগত ছারণ।।

क बद्धनजंदनाधी मक्टल मश्मग्र। তে: মার কি রূপ ভাহা স্থিত নাহি হয়।। আমি কি কহিব মোর নাহি কিছু জান। প্রদল্প হইরা যোলে কর পরিজ্ঞাণ।। পর্ম পদ যে তাহা কর্চ প্রদান। व्यालाटक क शरकाशास्त्र मिल कारित क्यांन । ष्वराखा अरमन ध्येषु शुक्रम ध्येशन। ভূমি কর্ত্ত কর্মা হে করণ সম্প্রদান ॥ खाशामीन मण्डा (ठ खाद्यम खाधांत्र : তোমারে এরপ ভানি করি নমস্তার। **जबाब्य कर्न जाटा इट्डेग्डा** (भाहित)। লখার ক্রীড়ার স্থাসসম্ভ বন্দনিত॥ 4বস্তুত গাদপত্ম করি ছে ভজন। দিবানিশি ভাহে বেন থাকে ভুঞ্জনেও !! तका श्रुक त्रचामग्र और १ काराज । ত্রতাপদ চারি বাব ভজনীয় হয়।। চাবিবার বলিবার তৎপর্যাতা গুল। ভরদ্বা**জ ভপো**ধন নির্বিকারী হন।। নিরাকার দাকার করিয়া এক মত। **७ कि लाद्य बूलस्कार्ड रेक्न मध्येर** ।। শাকার রূপেতে তিন গুণে তিন বার। নিরাকার ব্রক্ষে একবার নমস্কার।। এই চারিবার ভ**অনী**র সারে।দ্ধার। **४३७७ मूनि जा**नि खद किन **जा**त ॥

ন্থ রাঘর মোর নাম প্রভন্ন হর।
উচ্চঃম্বারে আমি কন নামান্দর কয়।।
উচ্চারণ করি প্রভু নন্দর সহিত।
আমি হে ভোমার ভক্ত ভোমার রক্ষিত।
মুহামূনি, সৃতীক্ষ যে করেন আসিয়।।
তব পাদপথ অনু নন্ধান করিয়া।
তার ছে আমার ভাছে শন্ধ ভীশ্ব মভি।
থে উচিত হয় ভাছা কর রখ্পতি।।
এই রূপে ক্ষমিগণ করেন স্তানন।
শীরেক্যারনাথ ভাগের শীরাম্চরণ।।
শীরাম্চন্ত্র প্রভিত্তিক।

শ্বাধিণী ভৈত্তনী: তাল টুংরি।
তে জায় সীজাপতি তাম। দুবর্গদশশাম ।
স্কান পাশন সংস্থার কারণ, অংশ তারণ,
সর্বাধ্যপাম।। ত্রিভাপ হরণ, বিপদ ভঞ্জন,
শ্রীমধুস্কান, ক্পায়ময় নাম। ক্রে।

পয়ার।

শিবসৃত গঞ্জানন আসিয়া তথন।
করমোড়ে রামচন্দ্রে করেন স্তবন।
চিত্রকূট শৈলোপরে শ্রীরাসমগুলে।
নমস্কার করি তব চরণকমনে।।
চেরাস সকল বেদে কন যে ডোমার।
চরণমহিমা বর্গ সকলের পার।।

भारुमूर्कि नवतृर्वामनभाग कास्ति। **एकि कांग्र नाम नित्त इग्र प्रध्य मास्त्रि !!** কুপার নিধান ভূমি পুজা গরাকার। পারম পুরুষ পুর্বব্রগা অবভার॥ कि छानि उपन्न अन्य अनन्त ना आहिन। महात्यांनी त्यांत्नश्रं क्रभ भाग्र थगत्न । क्व जिन्न स्वाटन महा डीर्थ का नी नाम। তথায় মরি**লে জ**ীর পায় ফোক্ষাম।। ७६ नाभ बन्तमश निन (मन कर्ल ! निर्काण मुक्छि मान एमन मर्क वर्ल।। নামের মাহ্যা কিবা কর সীতাকান্ত। ষিঅকরে কত সুধাকরে অবিশ্রান্ত।। এত বলি সিদ্ধিদাত। সইল নীরব। গুহ আসি ছয় মুখে করে বছ তব।। बाम। द्वार नांदास्य नदनीलकांच। দেৱসেনাপতি আমি তোমার কুপায় 🛭 ভারক্ষে বিহুজোপরে করি আরোহণ। যথা তথা ভামি নাম করিয়া মারণ।। छाट्ट स्थात कांन काटन विश्व नाहि इश्र धनुर्व्वागधाती इत्य मिक कृति खंग्र ॥ ত্রিলোকের প্রিয় আমি ভোমার প্রসাদে क्नारत क्रिय क्या ठत्रभारत।।

শ্রীরামচন্ত্র প্রতি লক্ষ্যী আদি দেবীগণের স্তব '

## বাগিণী আলিয়া। তাল ছত।

তে কনুলাক রাম, ভাতুজভর নিবারি। ভাত্কুবোল্লব বিশ্বপতি ভবেবের ভাগারি।
ভূমি হে করণ সিজু, দহাদর দানবলু, বিজরংগ ক্পাবিন্তু, শকাবেনা গিল্লুণারি।
ন্যাতি পাতকী অন, বাগালতে ভীত মনা
দেহি চরণ শরণ, ত্রিভুবন মনহারী।
প্যাহ।

মহালগরী দেবী কন ও হে চিত্রগামী।

দীনাৰ লানীত কতে প্রেতিত যে আদি।

উংগতি ইংমাছি দেই সীতা প্রিয়া তব।

তোমার যে রপ ভালা আমি কিবা কব।

চরণ নিকটো স্থান দেহ হে আমারে।

কিম্পিক আর আমি কহিব তোমারে।

শার্দা কহেন হে জানকীকান্ত রাম।

তোমার কুপাতে মোর বাগ্দেনী নাম।

ব্রহ্ম স্ক্রপিণী বেদমাতা ইইয়াছি।

শীতা নথড্ল হৈতে আমি জ্বিয়ারিছি।

কুপা করি দেহ মোরে চরণ শর্ণ।

ইংমবতী হরজায়া যেড্হাতে কন।

নীতা অঙ্গ হৈতে জ্বাম করিয়া এইণ।।

### द्राग्द्रागा

জাদাশজি হয়ে আদি ব্যাপ্তা ব্রিসংযানে।
তোমার ইজ্যাতে নব কি কব তোমারে।
কালিকা আবিয়া কন ভয়ন্ধরা মূর্ত্তি।
হে রমুবংশের প্রেপ্ত ডোমার যে ভজিনা।
ভালা আমি কিছুই না জালি মারংমার।
ব্রুলাঞ্চের পতি রাম মহিমা জপার।
কপাতীত ব্রুলম্য বিশ্ব চিন্তাস্থি।
সর্বজীবে সম দয়া যোগ শিরোম্বি।।
নবীন জন্ম রাপ জগতে পুজিত।
আমি যে নিভান্ত প্রভু তব প্রাজিত।
ক্রীরাম চরিত্র কণা গুনিতে মধুর।
কেদারনাথের প্রভু গুঃখ কর দুর।।

শ্রীরামচফ্র প্রতি গন্ধর্ম ও সিদ্ধ ও চারণ ইতা। দি গণের স্থব।

রাগিণী বেছাগ। তাল জলদ তেতালা।
বছুপতি, আমি অতি, মুড়নতি, জভাজন।
হে জানকীবল্লভ, হে দেব ইল্লভ, রাম পতিত
পাবল।। হে ব্রহ্ম পরাৎপর, হে জগদান্তর,
নীলকলেবর, তুমি প্রম কারণ।। হে ভবভারক, হে শুভকারক, হে গুঃখ হারক, শনন
দায় নিবারণ।।

# ত্রিপদী।

হয়ে মতা পরাধণ, কহিছে গলুর্কে গণ मामा तांमहस्य विश्वकृष्ण । कृति गर्वी भूगांशात, निर्मत भव निर्विद्यात, इधि मात्र जिल्लाका छूत्र। न क्रव्यत्नारक सरमाष्ट्र. अड बद दनि छि. দ্যাদ্য কর পরিত্রাণ। भवरमाक ध्यां श्र करन, अ हान्ना करन करम. मिल यामा भनाकरिय छोन । णिल्लान त्यां धकार । अतिवादिस्य करत्, 👡 মুক্তকাও স্ততিনাকা কছে। त्रांभार शिख्य धर्न, कर्ल खरन श्रुनः श्रुनः, দিশ্বৰাতি শেসিজ যে নছে।। : भटरह रेवंद्रि ना गिटक, अन्तिर्व शृथिवीरक, नद्रांख्य शुक्रम अधान। ्वांनीत जार्गमा इत्यू, भ्रष्टभत्य तत्म द्रायः, किया गीनां कृत छन्नशाम ॥ कहिरक् ठाउपर्यं, नरमा द्राम नांदामन, त्रमांभि छ सूर्यायः नधतः। শ্রীনিবাস জনার্দ্দন, নরেশ রযুবস্থন, ्जानकीत्रम् द्रयुवद्र।। उद मारम रहाथ रहन, अश्वि म्लार्ग क्या श्वन, সেইম্ভ পাপ দথা হয়।

नांश्यत माहाका छन, किहा नह निश्नाह, मध्यामत्त्र पश्चमग्रा। কিল্লব্রগণেডে কয়, নামে রাল ব্রহ্মসং, ष्ममञ्जा ध्वनाम खीहदूरन : আমরাপামর অভি. অভাজন মুট্নতি, পরগতি মদ! চিন্তা মনে। हच्तरण त्याह कृषि, काकाण भाषान कृषि, ভাষ প্ৰণ কহিতে কে পাৰে। खाङ्ग हर अक्र भ छद. भा आत्मन विधि छ<. आगदा कि शांति विविवादि ॥ हाज ভাবে नमनम, हिन्दा क्रिय स्टिन भन्. কহিছে নফত্ৰেগণ বভ। महदार छोरचें।, खबार एवं राजिय स्थार ६३ ह्याडा स्वति मस्तर । জীচরবে নিরস্তর, মনঃ থাকে রঘুরত, কর হে অচলা ভক্তি দান। **बीत्वपावनाथ वर्ता. ७ भगगदाक्र**णत, অন্তকালে পাই হেন স্থান !!

জীরানচক্র প্রতি তীর্থগণের স্থব। রানিণী বেঁহাগ। তাল চিমে তেতালা। রামধন যোগীর ধন ব্রহ্মনারারণ, যে স্ফটি স্থিতি, প্রলম্ভ কারণ হন।। যাত্রে বিধি হর, ধায়ে নিরস্তর, দৈই পরাংপর ভুমি ভারে ভার মন। ফ্রা।

### भेगात ।

आक्रिकी यदमम नरभः नश्रील द्रोधव । खर भाषभं**य** देहाड हहे सु केंस्टर । । नकः नारम मुदियााजा मकल मर्गारक। मुक्ति नाम कहिएको इ मर्न्द्रभा नराइय ।। আমি কি বলিব প্রভুষে রূপ ভোমার। নবনীলকায় পূর্বপ্রা জনভার : ভৌপদ্যাভনয় জগল্পম হিতকারী। সাক্ষাৎ পরম ধর্ম লোক দর্পগায়ী। দেবারি নাশিতে অত্তার্ভুমধবে। ध्धनमामि भी छा शुक्ति हद्रनक्षरहा ॥ পাতকী নিস্তার তেতু নাম চমৎকার। বারাণ্সি আসি স্তব করিতেছে আর 🛭 বারাণিদি লামে আমি বিশ্বাত সংগারে। ভোমার মহিমা প্রভু কহিতে কে পারে।। ७४ माम উপদেশ জीবেরে করিয়া। করিতেছি নিস্তার নির্দাণ মুক্তি দিয়া।। জাত এবা আমি ভোমা করি হে ভজান! Bর বে শরণ দেই खीর चून स्व ।। ध्यमात्र करतन खर खीतामहत्ररण। क्षप्र जांग क्षप्त जांग बलिक्क वेषरनः॥

ভোমার যে নাম উপদেশের কারণ 📖 ভাস্কর সর্বাদা হেথা করেন প্রন।। এই হেডু মুজিদাতা হয়েছি প্রাভূ আরি । বা জানি ভগন্ত প্রথমামি সাভাস্থামী।। মায়া কৰ হে নাগ হে নীভাপতি রাম। ভোষার মায়াভে ধরি মায়াবভী নাম 🖞 ভীর্থ সকলের শ্রেম আমি হইভেছি : অণ্ডানুসারেতে মুক্তি দান করিতেছি । किन्तु जुमि भारत द्वान (पर ७ ठत्रत)। দিবালিশি পাদপথ জাগে যেন মনে দ প্রণাম করিয়া কাঞ্চি কন ঘোডহাতে: হয়েছি কাঞ্চনবতী তোমার আজাতে এ य दाक्ति अ छाध्न मद्र काश्चन (ई इयू। आंगांटक ध्वमस हरत तुक् प्रशंभग ।। পুস্কর কহেন রামচন্ত্র প্রণমামি। সব ভীর্থ মধ্যেতে পুষ্কর ভীর্থ আমি । ভোষার আজাতে আমি জীবেরে নিস্তারি ध्यमांन कवि ए गमा निर्याल विखाति॥ 'নৰ্মদা কহেন বিভূ ভূমি পূৰ্ণৱক্ষ। আমি তব আজ্ঞামত করিতেছি কর্মা। জীব সকলেরে করি কুশল প্রদান। এই হেড় নৰ্মদা হইল মোর নাম ' আমি পাপরপা করি ভোমারে প্রণতি। क्रिशानगरन् क्षेत्र (श्रु ११ मध्यावि॥

किए इन खेत्राडी धानारम को मात्र। करेगातक किस्तिन प्रतिस स्व आमात्।। याकात छेन्द्र स्थल शाक्ष्य कान्द्र। কার মহাপাপ নত কর্য়ে ভারং ; द्रकारका आदि भाग गत तके करता। প্ৰতৰণ আমি নতি কৰিছে সন্ধৱে॥ शंतरित अक्षत । तथा करइन तथुना। শমনের খনা আমি অভি সুলক্ষা ।! निर्मात अ छन मम (यवा भाग करत्। मक्ष माभ । ऋष्टि छात्र रुव्छ छेन्द्र ॥ মিখার স'হত শাল যে সকল ভাচ।। असे कति आमि छात्र भाग महा महा।। একণে ভাষাকে জানি জালিবার তরে। धत्रभी क्याड्रेटिय कवि व्यर्भभ मञ्जदत्र ।। नामादिश खन श्वीम करत छीर्थनात। बीवामहित्व बीरकमावनाथ करन ॥

শ্রীরাম প্রতি পর্যবতগণের স্তব।

রামনাম কর দাব তানিতা বিষয়চিতা করো লাক আর ৷ অনাতা শালা জন, দারা সূত ত্রা-তুর্ণা, মায়াতে বল আবন, কে ভোনার তুমি কার ৷৷

## প্রার ।

সুমেরা করেন স্তান চক্ষুনীরে ভাগি। मगरल कल्लांमग्र द्वाग खनतानि॥ खर नमत्रकः म्लर्ट्स खामात खेलत्। নে পুণ্য প্রতাপে আমি হয়েছি অমর।। छक्त स्या खाव मुद्रशत वांम कत्त्र । সহিতেছি সেই ভার পুরক জন্তরে॥ ও চর্ণ সরোক্তে প্রণতি বিস্তর। সর্কোজামারে রক্ষাকর র্ঘুবর।। কহিছেন হিমালয় করিয়া ভকতি। পাদপথা পূজা করি যেমন শকতি।। তাহাতে করিয়া তব করুণা বিহিতে। হয়েছে আমার গৌরী হেন সুত্রহিতে।। जत नाम ख्याना इरवाष्ट्र अ कता ভোমার প্রসাদে মোর নাহি অমকল।। ভবে বিশ্বা যে'ড়করে করেন শুবন। প্রস্তাহ ভোষারে আমি করি হে করে।। ভোমার মায়াতে শৈলরপা গিরিক্স।। আখাতে বিরাজ নিতা করেন অপর্বা॥ कहिरछए श्रीनस्मोपन ध्रताश्रत्। হে অগদান্তর আমি ভোমার কিছর।। হয়েছি সকল ঔষপির সে আখার ! क्रिन नाथ निश्वाधाते तथा जिनश्मात ॥

্করি হে প্রণাম আমি ভৌমার চরণে। खकिक्षेत्र **क**टन (इ.स. कक्ष्में) नप्रस्म ॥ ভক্তিভাবে মলয় কহেন যোড্হাতে। হয়েছি দুগলিবুজ ভোষার কুপাতে।। ু পুগন্ধি চন্দন আর্দি করিয়াত আবি। তুশসী চরণপথা শ্পাশতে আমার।। ভাহাতে মুকতি পদ ধন্ম দীতাপতি। ७ हड़न दिरम स्मात् काक्य नाहि श्रेलि।' रेमनाक रहान अञ् कति नगर्कात्। পাৰ্বভীৰ ভাত আদি বিহীন্দ্ৰকুমার। কুপাকাংকী নাথ হে শরণাগত আমি। ছুনুকুন হও নোবে হ্বগতের স্বামী॥ তুমি ৰাজ ভূমি কাজ ভূমি সে বিধাতা। ভূমি ঋণ ভূমি ভপঃ মোকফলদাতা॥ पुत्र रह एक नका दी धन्य काउन। সম্ব্রক্ষঃ ভমঃ গুণ ভোমাতে ধারণ !! কি আর কহিব আমি পাষাণমূবতি। नर्वदंकरा औड्दर्श शास्त्र त्यन मिछ।। त्रामलम श्रीक रेमनगर सामनिक। শ্রীকেদারনাথ কছে শ্রীবামচরিত।।

শ্রীরামচন্দ্র প্রতি গরাসুরের তব। ক্সম ক্সম রাম ক্সম সীতারাম, রাম রাঘ্র হরে। ঞ

#### প্রার।

 क्ट्रेक्ल क्ट्रेड्ड्क्ट्यालकथ्न। উপস্থিত গয়াভীর্থ মধ্যে পিতৃণণ 🛭 ध्ववुक्त इरलम खुडिलाटी मरनावरम। नमकात कति ध्यञ्च (रुत्र क अश्रम।। আমার মন্তকে ভব যুগল চরণ। ध्यमान करव्र द्वाम क्रमलरक्षांहन।। সেইত তেক্ষেতে করি তব পিতৃগণে। ভরাইতে পারি কৃপা কর দীন জনে।। नभा नत्या विश्वलिक नत्या द्रश्रद्ध । नमस्य श्रृंक्रशास्त्र द्वजाशद्रारशद्र ॥ ধক্ম মর্ক্তাপুরবাসি পুণোর প্রকাশ। भारताक क्रांडिया अवकीर्व श्रीमियाम ॥ ' ৰুল্যান কুশলে লোক বঞ্চে পূর্যন্তিও। ব্ৰহ্মপদ দর্শন পায় যে করিতে।। ভজিভাবে রঘুনাথে করি**ন পুঞ্জ**ন। कांग्रमत्न वेङ्विध कद्रिलं खबन ॥ অপুর্ব শ্রীরামরাসক্থা সুললিত। **बिद्याद्रनाथ करह बिट्रांमहिन्छ।** 

শ্রীরাসচন্ত্র প্রতি বৃক্ষ ও পশু পকাদির তব। রাগিণী মূলতাল। তাল কাওরালি। কেল সমঃ সঞ্জনা রে রাকাপার। ভাব রে সেই ভবতর নিবারণ, নবনুর্বাদল শাদ্য, জীরাস ওণ

## श्रीय सामान

भाग, कि कह नो जान काम निकरण किन बाम ॥
जीतरन कि खर्ग तम, कि जात जारक मर्थन,
दाय नाम दिरन जना, ना प्रिंथ छेशाम ॥ जन्न
काल ना किखिरल, शत्रमान्य ना छादिरण, निकंषे
करेल जानि, मस्रावत नाम।

# भगाइ!

বুক্ষণ কহিতেছে রাম দয়াময়। क्रेग्राहि शङ्कश भारी प्रामाग्र । তব পূজা করি হে এমত নাহি শক্তি। करन अभि भाष जाहि यथा **एकि** !! नरीन धकुल शृष्ण शहा शाहा । মনের দারুম্ম সদা পুঞ্জি হে ভোমার।। তবে পশুগণ আসি সাহ প্রণমিয়া। জ্ঞান আরু বৈরখ্যাত। বিহীন হইরা।। পশকুলে জন্মিয়াছি অতি অপকৃষ্ট। বৃথা প্রাণ ধরিয়াছি অতি ছরদৃষ্ট ॥ আর কিছু নাহি শক্তি খেদে কান্দে নন্ : অনি নিক হয়ে ভারি ও রাজ। চরণ।। ৰংথাচিত রূপেতে করি হে দর্শন। भामवाद्य कर कुला वानि वित्रवन।। সম্বল নয়নে স্তব করে পক্ষিগণ। **उक्ष्मादा शक्ष्म क**रद्र विठातन ॥

#### 3133131

কুদ্রমতি ক্ষুদ্রভাতি প্ররাচার অভি।
তোমা দেবা হাল কইয়াছি রস্থাতি।
কেবল মলেতে মাথ করি নমস্তার।
আমা সবাকারে দয়া কর একবার।
থিতর করিল ভব পশু পক্ষিগণে।
শীরাম চরিত্র শ্রীকেদারমাথ ভণে।

সীতা সহ শ্রীরামনক্ষের ক্রীড়ার গ্রন

कहे काल मकालाज करतन खरन।

तिहे कारलाज छिटिन वारमात ध्यांवन।

नाना वामा वाखाउटाइ किनटक मुम्पत्र।

वीना वामा वाखाउटाइ किनटक मुम्पत्र।

वीना वामी छूती (छती वाख्नि इंडिक्ड)।

नाना न्छा नीक इहेरफाइ (महे खाँदन)।

खन्नधनि नमध्यित मना किन कारन।।

विखन्न विखन किम सक्क (नम धनि ।

महामास्म (कालाहरन श्रृदिन (मिन्नी।।

रमणिन घली। (काणि मध्यांदा ।

गीका मह त्रांसमध्य श्रीताम विनास्म।

रम खारमन वृक्ष श्रीताम किन कछ।।

रम महान्न खाना कथा कामि कन कछ।।

रम महान्न खाना कथा कामि कन कछ।।

निवस्न कन्न किन्न कन्नमा।

(कर रूठ উरेक्ट चरत गान कहिर**ए हि**। কেই দুকা করে কেই বাদা বাদ্ধাইছে ॥ করিছে প্রশংসা কেই হরিব অন্তরে। बाड़े करण द्रांगमरक श्रीवाम विकरत ग निक्षांनक्षत्रधी मीटा ध्ययूल नगत्न। शद्भिकृते हाझ क्य यन एमनशर्मा। তোষ্ধা একণে মোর শুনত বচন। গন্ধৰ্ম ভিন্নৱ আদি যত ভক্তগণ।। মোর নিমন্ত্রিভ যে যে দে সনারে লয়ে। ভোজন করহ মনে একজ্রিত হয়ে।। ज्ञान्त्रिक्टम निमञ्जून ना देश्य शाहात ॥ ভোজন কর্ম সবে সহিতে ভাহার॥ সুৰেতে ভূপ্তহ মানা রস পুত্রবর। আমার আজ্ঞাত সৰে করত ভো**জন** ৷৷ নীতা আজা শিরধার্য। করি দেনপথে। গন্ধবৰ্ব কিন্তুর আদি আহল দিত মনে।। धादर्ख मालम मात कतिराज (स्राध्यम । कानरमः (ভाजन कत्रि देवन काठमन।। ক্ষানকীর অক্স হৈতে যে সব পূর্বেতে। হয়েছিন উৎপন্ন সীতা আদেশেতে॥ ঐ কালে জীরাম করিলা আচন্দিতে। ভাহাদিনে অক্সে नत्र कति क्हेडिट ॥ নীতা নহ জীড়ার প্রবর্ত্ত রামধন। विशिष्यन श्रीभगस्थ उक्त समाजन ॥

তাহার উপমা দিতে নাহি ত্রিসংলারে।
অংশৰ জীরামনীলা কে বর্ণিতে পারে।
ভকত বৎসল রাম দশরপুস্ত।
ক্পামর বিশেষ অংশত গুণযুত।
জীকেদারনাথ চাতে চরণে শরণ।
রামরাবলীলা কথা হৈল সমস্থিত।

ইতি **জ্রীজ্ঞান**কাকে মহাযোগে **জ্রীউনা** মহেশ্বর, সন্মাদে বাসদেব সংহিত্যয়াৎ রাম-সাস স্মৃতি অধ্যায়।